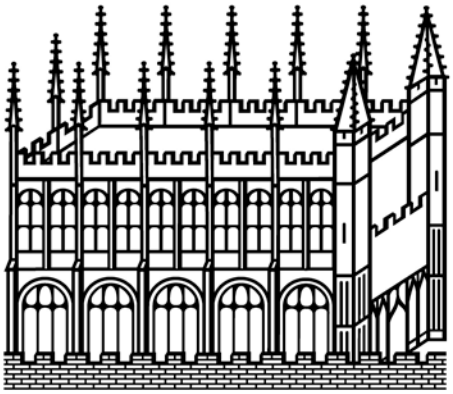


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi
RadhP 1

13.D.10.

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library,
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Hindi Radha

1





Aushadhi - saingraha - Kalpavalli.

Wakhudsingee Kalup Bully

श्री सच्चिदानन्दमूर्त्तये परमात्मनेनमः

औषधिसङ्ग्रहकल्पवल्ली

श्री मत्सकल काव्य व्याकरण पुराणाद्यनेक विद्या विनोदरसिक, परोप
कृति तत्पर स्वभाव, अयोध्या निकट वर्ति नौराढ़ी वासस्थ, पण्डितरा
ज श्रीराधा कृष्ण महाराज रचित

जिसमें

ज्वर, कास, श्वास, प्रमेहादि और वात पित्त कफ कृता नेक रोगों
के निवृत्यर्थ अनेक भांति की महा हित कारक औषधि
वर्णित हैं

वही

यथोचित अति प्रबन्ध से शुद्ध होकर

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवल किशोर के पाषाण यन्त्रालय में स्वच्छता पूर्व्वक मुद्रित हुआ॥

मई सन् १८७५ ई०

श्रीगणेशायनमः॥

अथनाड़ीपरीक्षा

दोहा

भूखे प्यासे सैनयुत तेल लगावे कोय। जेंवेन्हावेतुरतहीनाड़ीज्ञान नहोय॥ हाथ अंगूठा निकट हीनाड़ीजीवनमूल। ताते पंडितजीव कोजानैसुखदुख सूल॥ नरको करपददाहिनेनारीयको करपद वाम। तहांवैद जननिरखिकेनारी को परमान। आदिअंत अरु मध्यतेवातपित्तकफजान। क्रमतेनाड़ीतीनविधि यहनाड़ीको ज्ञान॥ सांपजोंककगतिसमचलैनाड़ीवातबखान। चपलकाग मेंढुकलवागतितबपित्तबखान॥ मोरकबूतरपड़ुकुलीराज हंसतमचूर। इन्हकीगतिनाड़ीनिरखिकफजानोयहमूर।॥ बारबारमंडूकगतिबारबारअहिगोन। बातपित्तकोनाड़िका पंडितजानोतौन॥ सर्पहंसगतिसमचलैनाड़ीतबकफबात। सिंहसिंहगतिपित्तकफभारीतबएबात॥ रहिरहिफोरतका ढ्यों कढफोराकरशोर। योंनारीजबजानियेसन्निपातकरजोर॥ तीसबारनारीफरकि फिरनारीरहिजाय। तबयहनिश्चय जानियेरोगीनाढहराय॥ रहिरहिरहि फिरफिरचलैनाड़ीवा रंबार। तबरोगीकेप्राणनिजयमकेसदनअगार॥ **षट्पदी** जिमतिमिनाड़ीचलैलवाव्यालहिगतिफिरिफिरि। रहिरहि नाड़ीचलैजायसूक्षमकैगिरिगिरि॥ फरकैकंठमंकार नित्यनाड़ीबहुतबहु। चलिचलिअंगुरीछुवैबहुरिनाड़ीबहकैबहु॥ एहिभांतिहोइबहुतौन तहिंनाड़ीको तबनिरखिनित जानो

असाध्यनाड़ी तबहिं सन्निपात बुध जानि चित्त ॥ पहिलि पित्त गतिहोइ बा त गति होइ बहुरि वह । कफ गति नाड़ी होय भेद कहि रियो बुद्धयह ॥ चक्र चढ़ी सी फिरै यह नाड़ी अपनो तजि । बहुत भयातक होय मोर गति चलै बहुरि सजि ॥ होय जाय सूक्ष्म बहुरि जानि परै न किये परस । यह भांति होय नाड़ी जबहिं तब असाध्य कहिये निरस ॥ दोहा ॥ नाड़ी फरकै मांस महिं बहु गंभीर बरखानि । नाड़ी ज्वर के जोर तें गुप्त अस्त अति जानि ॥ चौपाई ॥ काम कोप ते चंचल नाड़ी । चिंता रोग छीन निरधारी ॥ छीन धातु मंदागिन वारो । ताकी नाड़ी मंद बिचारो ॥ दोहा ॥ लोहू आंव बिकार ते गरुई नाड़ी होय । उदर अग्नि अति तब चपल हलकी लक्षण सोय ॥ सोरठा ॥ लक्षण जानो येह भूखे की नाड़ी चपल । मुनिजन करी विवेक अफरे की थिर जानिये ॥ दोहा ॥ उपहन अग्नि समान ज्वर मेलगिरि चंचल नारि । वह जीवै नर एक दिन मुनिजन कहि निरधारि ॥ जैसे डमरू चलत है यों नाड़ी चलि जाय । ताकी नाड़ी एक दिन नीठ नीठ ठहराय ॥ **अथ जीभ की परीक्षा** दरकी पीरी खरखरी जीभ पवन कहि देत । लाल स्याम वह पित्त ते कफ ते पिच्छिल सेत ॥ सूखी कारी कंटकित सन्निपात कहि दीन । निलवा लक्षण होइ कै अशुभ सुलक्षण हीन ॥ **अथ नेत्र परीक्षा** रूखे चंचल धूमरे भीमजरत से नैन । निश्चय उपजो जानिये वात रोग तब ऐन ॥ दीप सुहाय न संत तब पीत न घन तब पित्त । गीले चिकने तेज थर मंद जानि कफ मित्त ॥ वातपित्त कफ वात के कै पुनि कफ के मिलंत । मिलवर लक्षण होइ कै नयन बरन लखि संत ॥ कारे टेढ़े मोरु अति तंडा युत पुनि देखि । लाल भयानक नयन लखि कहौ त्रिदोष विशेखि ॥ आंखि भयानक एक जब औ दूजी मुंदि जाय । सो रोगी दिन तीन में यम के घर ढहराय ॥ जोगी के सुरत ही लोचन जोति विहीन । अस कछु कारे होय तौ जम सेवक कहि दीन ॥ चौपाई ॥ जाकी मुख द्युति घन सम कारी । लाल किंशुक सम अनुहारी ॥ चिनवत लगे भयानक भाए

ता रोगी की मृत्यु विचारी ॥ दोह ॥ भ्रमतेरुगतारेलगैएकदृष्टिमहिचेत । एकरातमह जमनगरमगरोगीगहिलेत ॥ अथअसाध्यव्याधिविधि । छप्पै । नींद नाश निशिरहै कंठजवकफभरिआवै । होयदेहमधिदाह चैनपल एकनपावै ॥ बात कहतनुनरानहोयलघुसुक्षमनारी । इन्द्रीसीवनदहनशक्तिनहिंजाइ विचारी ॥ होइजायरोगी सुइमितुरतरोगआधीनजब । ताकहंविचारिऔषधिकहुएमनाम तजकामसब ॥ अथज्वराधिकवातज्वर कंपवेग कंठमुख शोंठसूखैनिद्रा नाशशीकनहिंआवैभारदेहरुषापाइयो । अंगहियमुण्डपीरबदनविरसहोइगांठी ठोढीबातवेदनभरुचिअंतजानियो ॥ बदनकरुवाइअंगफुरियाकरननाद उरवा दविषलेषहोइउरजानको । श्रामपटअंतरोमहर्षसूषाकांसवमनजौंहोइ बातज्वर इमिजानको ॥ दोहा ॥ चीटमूतवैयनाअरुनप्यासप्रलापजम्हाइ । सूलअफर बोबातज्वरलक्षणयहनिजआइ ॥ अथपित्तज्वरलक्षणा चौपाई ॥ तीक्षन वेग जोर अतिशाइ । अलपनीदउकलेदअपार ॥ कंठऔरमुखनाकब रवानो । तिनकोपकवीयहमनआनो ॥ सेदप्रलापवदनकटुताई । दाहमूर्छ तृषाबटाई ॥ भ्रममदपीतनयनमलभारी । पितज्वरकोलक्षणबादी ॥ अथ कफज्वरलक्षणा चौपाई ॥ निश्चलअंगवेगपतराई । मधुरवदनआलस्यदराई ॥ अरुमलमूत्रश्वेतरंगहोई । तम त्रिपितजानहुयेदोई ॥ गरुताशी तऔरउकलेद । ऐमहर्षनिद्राअहभेद ॥ फुरियाअंगसीसपरसेक । खजुरी तंद्रा छर्दिविशेक ॥ तातीवस्तुबहुतमनमानो । मंदपेटकीअग्निबखा नी ॥ पीनसअरुचश्वेतदृगकास । कफज्वरकोएकरोप्रकास ॥ अथ बातपित्तज्वर नींदनआवैमूडपिराई । भ्रममदकंठशोथअधिका ई ॥ रोमहर्षवमिअरुचिबताई । मांडगांठउपजैअतिपीर । मानोलगैविस धारेतीर ॥ मौनहोयअरुहोइजम्हाई । बातपित्तज्वरलीनिबताई ॥ अथबा तकफज्वर निश्चलअंगनींदअतिआवै । गांढगांठअतिपीरबतावै ॥ पीनसहोइहोइअरुगास । मूडपिरायपसीनानास ॥ वेगहोइमध्यमजे हिजोर । देहमाहसंतापकठोर ॥ ऐसे लक्षणजनुअनुमानो । बात कफज्वरताहिबखानो ॥ अथपित्तकफज्वर ॥ ॥ चौपाई ॥ लिबिरलिबिरमुखकरुवो होई । निद्रामोहमगट अ-

तिदोय॥कास अरुच अरु लागे प्यास। फिर फिर होय दाह परगास॥
अरु फिर फिर जाड़ो लगि आवै। रोगी पल भर चैन न पावै॥ प्रगट
होइ लक्षण जस षैहै। पित्त कफ ज्वर वैद्य वतै है॥ अथ सन्निपा
तलक्षणम् छिन मो जाड़ो छिन मो दाह। मूड़ पीर नहि होइ
निवाह॥ संधि संधि हाड़न मों पीर। नैन निमें भरि आवत नीर
टेढ़े पलक नवन अति लाल। भरि राखो हेमनो गुलाल॥ करन नाद
अरु कान पिराई। कंठ कहोइ कंठ भरि आई॥ तंद्रा मोह मलाप प्र
काश। स्वास अरुचि अति उपजै कास॥ जीभ खरखरी जरै स
मान। सिथिल अंग सब होइ निदान॥ कफ सोहू उगिलै मुख
पित्त। धुनै सीस दुख पावै चित्त॥ आवै अलप पसीना अंग। थो
रो नींद मूत्र मल संग॥ देह दूबरी अधिक न आइ। घन सम कंठ घनो
घहराइ॥ देह दद्दोरा कारे लाल। मंडल होइ के बड़ विशाल॥ पकै
कान मुख बोलन आवै। अधिक उदर मधि बोध न आवै॥ जाड़ो ल
गै सबै दिन सोवै। अरु जागत सगरी निशि खोवै॥ रैन दिना के जा
गत जाई। बहुत पसीना कैन हि आई॥ हंसि हंसि नावै गावै गीत।
लीला निरखि होइ मन भीत॥ बहुते दिना रोग पचि जाय। सन्निपात
के लक्षण आय॥ दोहा॥ ज्वर में लंघन प्रथम ही मुनि जन दई ब
ताय। काम सोक भय सोक ते वात ज्वर पचि जाय॥ चौपाई॥ वात
ज्वर अरु पैज्वर वारो। भूखो होय सो वहुत विचारो॥ नारि गुर्विनी
बालक प्यासो। बूढ़ो अरु डरियो कास सो॥ अरु दुर्बल इन कवि
गुन तारै। उदर वात होई पुनि जाई॥ इतनो रोगी बुध जन लेइ।
लंघन करै न इनको देइ॥ दोहा॥ लंघन मानुष करत है दोष सहि
तवह आहि। दोष गये फिर कैसहू लंघन करो न जाय॥ सोरठा॥ स
प्त दिवस लै बाइ दस वासुर कहि पित्त को। कफ ह्वादस दिन आय
युवा फेरि जीरन कहो॥ जानि हो ज्वर परपक्व भव॥ दोहा॥ प्यास
भयानक वहुत है प्यास हरत है प्रान। प्यासे को जल दीजिये यही
वात परमान॥ मोह प्यास ते होत है नो हलै नहै प्राण। तातें पैउन

कवन विधि वरजैं जल को पान ॥ चौपाई ॥ नयन रोग ज्वर मंड-
ल अंग । उदर रोग को लखौ प्रसंग ॥ मंदागिनि अरु अरुच वि-
चारौ । मुख जरिबो पीनस निरधारो ॥ अरु ज्वर सोथ रोग फिरए
सो । फारा अरु मधुमाहुर तैसो ॥ इतनो रोग जाहि लखि पावौ
ताहि कुन कुनो नीर पियावौ ॥ छप्पै ॥ मूर्छा दाह महागर मीश
रु पित्त घनो जेहि ते दुख पावै । राह चलै अति होय परिश्रम चोट
लगे कछु जासु न भावै ॥ पित के रक्त के दाह को जोर श्री खाये
ते माहुर जोर जनावै । होत है रोग इतो नर जाहि को ताहि को सीत-
ल नीर पियावै ॥ चौपाई ॥ पीनस अरु नूतन ज्वर जानौ । और
गल स ह रो त बखानो ॥ पीर पसुरि आकी करि देउ । संग्रहणी
पुनि मनधर लेउ ॥ आधमान अरु अरुचि बतावै । पित्त व्यथा अरु
कफ मन लावै ॥ गुल्म विरोध काश अरु श्वास । विदृधि रोग जो होय
प्रकास ॥ बार बार हिक्का जो होइ । स्नेह पान नर करै जु कोइ ॥ इत
नो रोग जाहि लखि पावै । ताको ताता नीर पियावै ॥ इति ॥ जल
औटै आधा बाकी रहै तीनि हो सा वात ज्यों अर है भेद तेसर में:
हेमंत में: ग्रीषम सिसिर बसंत में: ॥ वर्षा में ॥= जरावै बाकी रहै सो
गुन दायक ऊष्णोदक है सो उस्नोदक है ॥ दोहा ॥ स्वास कास ज्व
मेद कफ वात अरुचि मिटि जाइ । साधै वस्तु करै अगिनि ऊष्णोद
क गुन आइ ॥ चौपाई ॥ चरन हीन जल वात बुझावै । आधो ही
न पित्त विचलावै ॥ कफ हर हीन भंश जव हीन । लघु पाचन दी
ष न कहि दीन ॥ **सन्निपात ज्वर** जुगुल ज्वर में हित है ज्व-
रा दौ लंघनं कुर्य्यात पाचनं मध्य मे हितं अंते विरे चनं कुर्य्या
दिति सर्व त्र निश्चयः ॥ **पाचन काढ़ा** सोंठ धनिया देवदारु
भटकैरै आजवन माराजर जरसावै वेदतवदेइ बिजौरा की
जड़ पिपरामूर मोथा सोंटि कचूर जवाखार क्वाथ के के
फ ज्वर हित है पितपापरा कटाइजर ककूंदनि चिराइ-
ता कुटकी रसाजड़ काथ करि चीनी डारि पीवै-

पित्तज्वर जाय अन्य परवर पत्र के क्वाथ करि अष्टांश शेष रहै तबमधुडारि पिवावै **दाहपित्तज्वरमें** परवरपत्र नीमकेछा ल दारु अमिलतास त्रिफला रुसजर **क्वाथ अतरिप्पा मेहित है** अन्य त्रिफला पीपर इन्द्रजव मोथा नींवछाल दारु क्वाथकरि मधुयुक्त पीवै **एकतरा जाय** हरै जवासो इन्द्रजव परवरा गुरुचि नींवछाल क्वाथ करि पीवै **तिजारीजा य** सोंठि धनियांमोथागुरुचिचन्दनरक्त खसक्वाथकैमधुखांडयुक्तपीवै तोतिजारी जाय सही- मोथा भटकटैया की जड़ सोंठि अरंवा गु रुचि पीपर क्वाथ करि मधुयुक्तपीवै **विषमज्वर नरहै** अन्य जीरा २५ गुड़पुराना २५ मिश्रितकरखाय **वातदाहविषम ज्वर नाशै** हरैचूर्ण करिमधु संग चाटै **विषमज्वर नाशै** ॥ पीपर ५ दूध संग खाय नित्य बढ़ावै ५ जव १०० होय तवयटावै अन्नते ५ कास स्वासरुधिर विकार पांडु ववासीर सोथ उदरगुल्म विषमज्वरहरनबर्धमानपि ली है पथ दूधभात खाय अन्यपहेज भंगरा की जड़ डोर से कान में बांधे तो **रात्रिका ज्वर हरै** स्वेत कनेर की जड़ कर मेबांधै **जूड़ी जाय** सहदेई की जड़ नग्नहोके ला कान मेबांधे **कौथियाजाय** कौंछाडी पत्र कैरस अंजन करै तो **चौथि याजाय** पिपरामूल हरै कुटकी मोथा क्वाथ कैपीवै **ज्वर सब मिटै** कूट सोंठि असगंध सरसों समलै चूर्ण कै धूरा करै तो **वातपित्तज्वर नाशै** पुहकरमूल कायफर काकरा शृंगी पिपरी चूर्ण कै मधुसंग चाटै तो **काशश्वासज्वरकफ ना शै** मेथी मैनफल औट पीस लेपै तो **हाथपांव की जरन जा य** जिहकी देही में दाह होय तो उत्तानपारि दोढी पर कांस पात्र धरि सीतलजल छोड़ै पतरीधार से **दाह दूरहोय** नीवपत्र वैरिपत्र पीसु पानी से मथै फेना काढि लेप करै **अग दाहजा य** ॥ **अथ तेल** ॥ हरदी लाख मजीठ को कल्क करै वुध बीस लेइ तेल तेषटगुनो वहुरि दही को नीर ॥ छाछ कल्क वा तेल

मेंदारी बेद पचाइ तेलल्गावै अंगमंदाह सीतज्वर जाय लाख जेठी मधु हरदी इंदोरन की जड़ मजीठ वनभांटा सेंधो कूट सतावरी जटामासी रासनि तेल दधि को तोर ६६ औषधि सम भाग लैकाल करि तेल मेंपचावैतव सिद्ध होय **सर्वज्वरनासक तेल** दोहा ॥ दै हरदी त्रिफला बहुरि कुटकी मोथा लेइ। नीमछाल सपटोलछाल पलपकुटाई लेइ ॥ इनको विधि से क्वाथ करि दीजे तुरत पिलाय होय अचेत सचेत सो सन्निपात ज्वर जाय ॥ धनिया गुर्च पद्मष्ट क्त चंदन नीव की छाल सबसै काढ़ा के पीवै सर्व ज्वर मिटै। अन्य। पुहकरमूल भटकटैया काकड़ासृंगी त्रिकुटा अगरैल जवासा स म भाग लै चूर्ण के मधुसंग चाटै तो हुचकी कास स्वास कफ कंठरोध मिटै **सन्निपात को अवश्य** गुर्च मोथा सोंठ चिरायता चूर्ण के अदरक के रस से चाटै कफ दूर होय ॥ अन्य ॥ वचा चिरायटा काकड़फर कुटकी अगरैल सब मेरा करि धूरा करै त्रिदोषजर जाय ॥ दोहा ॥ सोंठ मिर्च पीपर हरद लोध सुपुहकरमूर। फूटकलौंजी कंटकारि जव कुटकी अरु कचूर ॥ इनमधि डारि चिरायता ग्रन करै क नाढ़। सन्निपातज्वरहरन को भलो अधूरो आढ़ ॥ अर्थी पीस भु जाय के करै अधूरो अंग। सन्निपातज्वर हरनकी धुरै पसीनो अंग सोंठ कलौंजी कायफर कुरथी ए सब आनि। करन मूलका कुनकुनो औषध कहो दरवानि ॥ कर्णिक सन्निपाते इति ॥ **अथ ज्वर उ पद्मकादस** सांस मूरछा अरुचि अरु छर्दि तृषा अतिसार। मलबंध हुचकी काश्य हुल्लास पीनसि दार ॥ इति ॥ त्रिकटु मोथा कचूर गदह पूर्ण पुहकरमूल पंचमूली क यई गुर्च क्वाथ कै पीवै स्वास उपद्रव जाय ॥ अमिलतास बड़ी दारु कटुकी हरै उसीर पितपापरा क्वाथ कै पीवै मूरछा मिटै ॥ सोंठ मिर्च क्वाथ कै जल मुख में रखै अरुचि जाय ॥ कागदी नींबू कारस चाटै तथा विजौरा कारस के सरि सेंधो मधु युक्त मुख मेंधरै अरुचि जाय ॥ जैरि विजौरा चूक अरु दाड़िम रस जंभीर। जीभलेपतेयहहरै तुरत तृषा गंभीर ॥ तज पत्रज अरु लाइची चंदन दारु उशीर चूर्ण मिश्री सहत गुत यह चाटै बुध वीर ॥ ऐसो तृषा त्रिदोष

को और पित्त की जाय। दाह मिटावै जर हरै यह या को गुन आय॥ वि
राइता पित्तपापरा गुर्च मोथा पाढ़ि सोंठ इन्द्रजव कुटकी काथ
के पीवै **ज्वरातीसार नीक होय** सेंधो पानी में घसि लासु देइ
दुचकी मिटै पीपर पिपरामूर सोंठ इन्द्रजव चूर्ण के मधु से चाटै
कास मिटै रुसके स्वरस मधु से चाटै तो कास जाय इति **अथ अ-
तीसार** अग्नि घटावै उदर को जब बाढै जल घात। होंहि पवन आ
धीन मल सहित तरै बहि जात १ अवन लगै मल जल सरिस जबै बार
हीं बार। अतीसार तेहि जानिये छहविधि वहै प्रकार २ वात पित्त कफ सो
क अरु आंव विदोष जो चोर। या विधि सबये जानिये अतीसार छहगोर
२ धनिया सोंद मोथा बेल खस काथ के पीवै आमशूल मल बंध
ग्रहनी हरै पाचन दीपन है **धान्यपंचक** सोंद काथ के पीवै पिता
तीसार जाय - मोथा बेल खस धनिया सोंठ अतीस काथ के पीवै
विबंध नीक होय आमशूल ज्वर रक्त रहित अतीसार नीक होय -
चीत चूर्ण के मधु के साथ चाटै तो रक्त पित्तातीसार नीक होय - सोंठ
रेंड के स्वरस ने पीसे पुट पाक के मधु से खाय तो शूल अतीसार अरुच
नाशै **अथग्रहनी** चौपाई॥ अतीसार जबहीं मिट जाई। मंदा
गिनि नर गरुवो खाई॥ ताते उदर अग्नि अति सूखै। उदर अग्नि बग
हणी दूखै॥ ग्रहनी दुष्ट न अन्न पचावै। जो कछु खाय अपक्व गिरावै
पचै करै पीड़ा दुर्गंध। फिर फिरि द्रव अरु फिरि फिरि बंध॥ दोहा॥
संग्रहणी को यह कहौं लक्षण विरचि विचार। इमि संग्रहणी जानि
ये तब कीजे उपचार॥ सोंठ बेल पीपर स्यामसधना अरु सेंधो लोन
मिलाउ। वा संग्रहनी बंध को काटो करिके प्याउ॥ सर्वौषधते अ-
ष्ट गौ का माठा है संग्रहनी नाशक॥ अन्य॥ लौंग हरे कमलगट्टा
इलाइची छोटी समले चूर्ण के मधु संग खाय तो संग्रहणी मिटै
अथ ववासीर वात पित्त कफ सहज ने लोहू अस त्रै दोष। छः
प्रकार गुर प्रगट है होत अरस को दोष॥ दोष दुःख बहु भांति की
मेढ कांस अरु ख्याल। गुदमधि अंकुर मास के करै अरस बेहाल

मिर्च,सोंठ२ चीन४ सूरन८ चूर्ण कै गुड़ समलै गोली बांधै खाय तो मंदग्नि गुल्म प्लीह वा बवासीर नाशक गुटिका प्रसिद्ध है ॥ अन्य॥ इलाइची २५ तज १ पत्रज ३ नागकेसर ४ मिर्च ५ पीपर ६ सोंठ ७ कमदृद्धि सब औषध के सम मिश्री लै चूर्ण कै खाय तो बवासीर अरुचि गुल्म मंदाग्नि नाशै सत्य कैनैनूतिलखाइकोसूरननेनू खांड । खायदहीशक्कर मठा करै अरकसको माड ॥ पीपर चूर्ण कै गौ के मठा में पीवै तो बवासीर जाय ॥दोहा॥ सोंठ हरीजोगतेंग्यो परमेह विलाय। सन्नी चित्रकजोगतेंत्यौं गुद अंकुर जाय अथ मसूरिकारोग ॥दोहा॥ फुरियासगरीदेहमें यहमसूरिकाजान । अंगभंग कंडूकरैतिधमज्वरपहिलबखान ॥ बेलबेंतबांसकै गांसी क्वाथकैपीवै मसूरिकाजाय॥दोसीतलजलअमलीहरदपीवै पहिलेजानि। ताकै तनमें सीतला कढैनपहलेजानि ॥अथ अजीर्ण सहजवातपित कफ अरुचिऔर सांस इमिपांच। विषमासनसोहो इछहकहै अजीरन सांच ॥ गंधक३ सेंधो२ सोंठ१ नीव के रसमें मरदन कै टंक सवा भरि प्रातः खाय तो अजीरन जायभूषलगै ॥अन्य॥ हरैपीपर सोंचरलोन चूर्ण कै छाछमें की ताते पानी में खाय तो अजीर्ण अरुच मंदाग्नि अधमान वात सूल नाशै सही- चीतसेंधो हरै पीपर गरम पानी से पीस के पीवै तो मांस घृत अन्न अजीर्ण नाशै ॥ अन्य॥ पकेनभीरी नींबू के रस पीपर मिर्च सोंठ राई सेंधो सौंग सबसदृस टंक लेइ सोचर लोन टंक ४ हींग टंक ३ भूनिकै सब औषध चूर्ण कै रस सीसा में भरि कै चूर्ण डारि मुख बंद करि भूमि में गाड़ै दिन २१ बादलेइ जलसे धरै खाय मात्रा १२ तो अजीर्ण सूलविथा मिटै भूख बहुत बढ़ै॥ इति जंभीरी संधान ॥ अथविसूचिका दोहा ॥ सुचसमयेवेद निकरै पाय अजीरन बात। वैदविचित्रविसूचिका ताहीकोकहि जात॥ तरऊपरनिकसै नहीं अन्नवातकफदुष्ट। तासोकठिन विलंबिका कहतवैद गुणपुष्ट॥ चूकफूटसेंधव कल्क करितेलमें

पचावै सो तेल लेप करै तो मल वृद्ध सूलविसूचिका मिटै ॥ अन्य ॥ वच अतीस भंगरा हरे हींग इन्द्रजव आनि । सो चरलोन मिलाइ कै चूरन करिये छानि ॥ चूरननिसके नीर सों घोरि जवै वह खाय । सूलविसूचिक अरुचि अरु तुरत अजीरन जाय ॥ अथ कृम दोहा ॥ हृदय रोग जरकास भ्रम वातवेग अतिसार । केचु आउपजै उदरमहं यह लक्षण निरधार ॥ खुरासानी अजवाइन बासी जल में पीस पीवै तो पेट के कृमि गिरै ॥ अन्य ॥ अजवाइन गुड़ खाय तो कृम गिरै ॥ अन्य ॥ पलास बीज मधु संग खाय तो कृम गिरै ॥ अन्य ॥ वा वभिरंग चूर्ण मधु संग खाय तो कृम गिरै सत्य ॥ अथ पिंडरोग दोहा । स्वास कास पीरे नयन पीरे नख नतनुखाल । वमन सोथ धीपि अगिन पांडुरोग को ख्याल ॥ क्वाथ पियै दस मूल को सोंठ कपरछ निडारि । अती सार जर सोथ कफ पांडुरोग बिनिवार ॥ कै त्रिफला कै नीम रस कै गिलोइ मधु मेलि । दाह हृदै मधु प्रातही खाय कमल देठेलि ॥ अथ रक्तपित्त तीक्ष्ण कटु खाये अमिल रस जारत है पित्त । पित्त जरावत रुधिर को यह सुनु मेरे मित्त ॥ गुदमुख नासा श्रवन ते लोहू वारहि वार । निकसै तासो कहत हैं रक्तपित्त निरधार ॥ रस कै सरस मधु समभाग लैं खाय तो रक्तपित्त जाय ॥ चाउर कै जल सहत मिश्री पीवै प्रात तें रक्तपित्त जाय ॥ अथ कास प्राण वास ऊपर जवै मिलै उदान सो जाय । कंठ नाभ खेचन हृदय तवै कास अधिकाय मोथा रोहित कायफर हरर भरंगी न्याव । काकरासृंगि सौंफ वच देवदारु मिलाव ॥ धना पीपरा डारि कै करि काढ़ो हित जान । पीरवात कफ कास को हींग सहत सों सान ॥ कंठरोध मुखरोग अरु सूलरोग अधिकाय । हिक्काज्वर औ स्वास कै मानप्रभंजन आय ॥ अथ स्वास अन्न कास जब बढ़त है तबउपजत है स्वास । हुचकी एही हेतु सो ता मधिया को वास

दसमूल पुहकरमूल लै क्वाथकर पीवै तो स्वासकास पसुरीविथा सूल नाशै अथहिक्का सरसवंध अरु सीतलो अरुजो रूखोखायमिरो पानिधरिमूतिवोधुवां घामवहखाय ॥ सुनो बोरु लेवो वहुतरा ह दोरवो और । स्वांसकासहुचकीनके एइतनेहैं दोर ॥ मधु सौचरा विजौरा एस संग खाय तो हुचकी जाय ॥ अन्य ॥ सोंठ पीपर अंबरा मधु संग खाय तो हुचकी जाय ॥ अन्य ॥ सोंठ भारंगी गरमजल में पीस पीवै तो हुचकी जाय ॥ जोडकार वहुत आवै तो सवाय के वीज सरफोका की पत्ती ६ मिलायके हुक्का लेइ तो डकार वन्द होय अथ छर्दि अति कफअति संभोगते दूजादुर्वलगात। स्वासकास पीडितमहालोहू उगिलतजात॥ मंदागिनिअरुज्वरतृषामांसहानि सितनयन॥ हुचकी की औषधि विडकु आरिकै रस सोंठ मिलै कै खायतोहुचकी जाय बैरामी में वहुतहुचकी आवै तो असाध्यहै ॥ छर्दि ॥ विस्वरवचनक्ष इरोगइमितौन ॥ औषधि ॥ खांड सहत नैनू मिलै चाटै नित्य तो छर्दि रोगजाय असगंध गुरपुस चूरन कै सहत दूध संग पीवै स्वास कास छर्दि जाइ अथ अरुचि जीभदोष हियदोष अरु मन संताप तृतीय। सन्निपात अरु दोष ते अरुचिरोग कहि देय ॥ औषधि ॥ मिर्च इलाइची अदा अमिली को रस संग खाय तो अरुचि जाय ॥ अथ तृषा वारवार पानी पियै तृप्त न एकहु होय। फिर फिर चाहै सलिल को तृष्णा कहिये सोय॥ मिश्रीलाइ दाख मधु खजूर इन का पानी पीवै तो तृष्णा जाय ॥ अथ छर्दि वातपित्तकफ अरु वहु ज्वर दोष वल खाय। लटी वस्तु देखै वड़ी छर्दि पंच विधि आय ॥ कंजा की फुनगी लोन खटाई संग चटनी की चाटै मात तो छर्दि जाय ॥ अथ मूर्छा जानपरै दुखसुख नहीं गिरै काट सम देह। ताको कहियत मूर्छा इहै जानि संदेह॥ पीपरि चूर्ण करि मधु संग चाटै मूर्छा मिटै ॥ मिर्च अदरक के रस में घसि नास दे तो मूर्छा मिटै अथ दाह दोहा॥ पित्त रक्त सो

मूर्छा तपन ऊष्म अरु दाह। त्वचा मांऊ यह कहत हैं ताहि पित्त समहार ॥ बांस छाल कै क्वाथ कै सीत होय मधुडारि। पीवै तो विन रक्त होय दाह दूर होय अथोन्माद दोष आम रंगजाय कै मत्त करत मन मोहि। व्याधि इहै उन्माद इमि नाम बतायो तोहि ॥ अथ अपस्मार चौपाई ॥ मोह मगन मन निस दिन रहै। मूल जाय जो बातैं कहै ॥ दोष कोप की बढ़ती कहि। अपस्मार की लीला यह है ॥ औषध ॥ पुष्य नक्षत्र में सुगा कै पित लावै तासों अंजन करै तो अपस्मार मिटै ॥ अन्य ॥ कुक्कुर कै पित्त घृत संग धूनी देइ तो अपस्मार नाशै ॥ अन्य ॥ वच चूर्ण कै मधु संग प्रातः खाय तो अपस्मार जाय पथ दूध भात जवासा जल में पीसि के पीवै दिन ३ तो अपस्मार जाय ॥ अथ वातव्याधि हाथ पांव अपनो कुपित वात गहै जब अंग। तब वाही में होत है अंगी वात परनंग ॥ अथ वातरक्त दोहा ॥ पवन रुधिर असवार को इमि करि जानिस रिष्ट। अंग छुवत जानै नहीं तन उपजावत कष्ट ॥ मंडल होय वि सूचिका विकल अंगुरिया और। वात रक्त लक्षण विकट वैद्य क हैं तेहि ठौर ॥ वात पित्त जब अंग में रहै बहुत दिन छाय। तब वह नर की देह में देत काठि उपजाय ॥ औषध ॥ दारुहरदी वच गुर्च कुटकी त्रिफला नींव मंजीट सम लै काथ कै पीवै तो वात रक्त कढ़ि नाशै ॥ अन्य ॥ पान चमेली पत्र धतूर पत्र इन कै रस सुरेंढी कूठ मैनसिल पारा सम लै खरिल करै तेल मय हरा अंग में लेप करै तो खाजु दाद कुष्ट विसर्प देह की श्यामता वात रक्त सेंहुआ सब रोग नासै ॥ ध्रुव मिदम् ॥ अथ आम वात अधिक पवन पर तेज वहि आम कफू बहु जाय ॥ बहु भारी सो आय यह आम वात यह आय ॥ जानु नाघ कटि उरू मधि सूल होय अति जोर। आम वात वेदन कहौं यह वेदन सुकुठौर ॥ औषधि ॥ राखनि सोंठ रेंड की जड़ देवदारु सब गुड़

में मिश्रित कै खाय तो आमवात नाशै **अथशूल** वातपित्तक
फ पित्तकफ वात पित्त कफ वात। आम वात त्रै दोष को शूल आ
ढ है जात **अथपरमानशूल** अन्नपचै जब होय तब शूल दुख
को धाम। करै वन्द मलमूत्र को यह है शूल परिनाम॥ **औषध**
कंजा सोंचर सोंठ हींग लै गरम पानी से पिये तो वातशूल
जाय **औषधि** हींग सोंठ सोंचर काथ कै पीवे कफ वात के
शूल विशूचिका जाय **अन्य** भूसी धान की जल सिक्त और
तिल पीस एकत्र पोटरी करि अग्नि में सेंकि पेट में कै बार बार
तो पेट शूल मिटै **अथगुल्म** हृदय नाभि के बीच जो पलना
गांठि जो होय। रुधिर दोष ते पंच विधि गुल्म कहावै सोय॥*॥
औषधि मिरच हर्रे बावभिरंग सोंठ ४ हींग १ पीपर ८
चीत जवाइन ७ सब चूर्ण कै गरम जल और मधु संग खाय
तो गुल्म रोग स्वास कास संग्रहनी मिटै **अथ मूत्र कृच्छ**
वात पित्त तिर दोष कफ शुक्र वेग अभिघा शुक्र रोध अपस्मारी
मूत्र कृक्ष कहि जात तनिक तनिक करि आइ कै मूतै बार बार
निकसै पीड़ा सहित वह मूत्र कृच्छ निरधार **औषधि** जवाखार
गुखरू काथ कै पीवै तो मूत्र कृच्छ जाय **अन्य** जवाखार मि
श्री सम लै खाय तो मूत्र कृच्छ नाशै **अन्य** दूध गरम करकै गुड़
डारि कै खाय तो मूत्र कृच्छ अपस्मारी वात दूर होय **अथ**
अपस्मारी राह रोकि कै मूत्र की करि अरु वस्ति मझार करै वे
दन अपस्मारी यह जानो निरधार **औषधि** पारवान भेद शि
लाजीत खांड़ काथ कै खांड डारि पीवे तो पित्त अपस्मारी
जाय धान तुसाइ कनीर सों घोरि हरद गुड़ खाइ विकट अप
स्मारि लिंग की तुरत विदा होय जाइ **अथ प्रमेह** ये उपजै छह
पित्त ते दश कफ ते ते साध्य चार वात ते होत है ते परमेह अ
साध्य त्रिफला चूर्ण करि मधु संग खाय तो जीर्ण प्रमेह
मिटै सेमर छाल को रस और हरद और मधु संग खाय तो

प्रमेहसब मिटै **अथ मेद** दिनसोवैन चलै फिरै मधुर शब्द
सखाय। अरु कफपित्तविकारते मेदरोग अधिकाय॥ उदर
पादकुचमधिबढ़ै मासबहुतयहभेद। बलउत्साह घटैबहुत
ताहिकहत हैं मेद॥ बासीपानीमधु समलैपियैतो मेदमिटै
अन्य सतुआ दहीको तोरमें घोरिपियैतो मेदमिटै बेलपत्र
कोरस बस्त्र ते छानिपियैतो मेदरोग जाय **अथसोथ** वात
बाहिरीनसनमेंलायरक्त कफपित्त। दोषसुविष अरुचोट ते
करतसोथको मित्त॥ गुड़पीपर सोंठ चूर्णकै खाय तो अजी
र्ण पित्तसूल सोथमिटै **अथांडवृद्धि** वातपित्त कफभेद
अरु मूत्ररुधिरबढ़िजात। अंडवृद्धिको सातविधिपवन
करतकहिजात॥ चंदनमोथा पद्माषनीम कमलजड़
दूधसोंपीसलेपैतोअंडवृद्धिजाय कुशवारीपरीमहकै पपीस
बर छेउटाकै पती मदार कै कली हाथी कै खूंट तेलकडू म
लहम कै लेपकरै तो असाध्योकुंड मिटै **अथविघ्नरोग**
उरसंधीमधिदोष सोजवही सोथकछुहोत। विघ्ननामतोसोथ
कोकहो मुनीश्वरदेत॥ पीपर हरै सेंधो पीसि बदी कै रंडके
तेल में पचै लेपै तो विघ्नविथा मिटै **कुष्ठे लेप:** सरसों बंजा
हरद हरैं बकुची सेंधव बावभिरंग गोमूत्र सों पीसिलेप
करै तो कुष्ठ मंडल जाय **गजचर्म** हरदी मदार कैपत्र कैरस
काढ़ि तेल में पचावै लेप करे गजचर्म जाय **सेहुंवां की औ**
षधि सोंठ पीपर मिर्च पवांर के बीज मूरी के बीज माठा में
पीसि लेप करै तो सेहुंआदाद नाशै॥ इति॥ कूटरेंड की
जड़ मट्ठा से पीसि लेप करै सिर व्यथा जाय **अन्य** के सर
बृत सोंभूनि मिश्री समलैदूध सों धोरि कै नासदे तो मूड़वि
था मिटै **आधासीसी मिटै** अथनेत्ररोग-वातपित्तकफ
रुधिरसों बहैनयन सेंनीर। नयनरोगवह कहत हैंप्रबलक
रतहैपीर॥ नीमपत्र बाचमेली के पत्र पीसिघृत मेंभूनैकुन

कुन रहै तो आंख में बांधै पीड़ा जाय **अथ नेत्र चिकित्सा** घिया रसवत मासे ८ मिश्री मासे८ नीला थोथा मासे १ अफ़ीम रत्ती ६ मिश्री और रसवत पीतर के कटोरे में पानी ७ = दैके औटै सीरा सम होय तब उतारि कै नीला थोथा अफ़ीम बूकि कै छोड़दे वस्त्र से छानिधरै से आंखी में देइ तो पीड़ा और तिमिर धुंध मिटै निर्मल होय दृनिशा अजय सार के दूध सोंवसै कायफ र नयन फूली मिटै छोटी बड़ी अरु पावै जिय चैन **अथ कर्णरोग** दुष्ट पवन कफ सहित करि कान मैल करि पोष पंकअ वै अरु बधिरता शूल करत है दोष ॥ मदार कै पीपर पात लैना में घृत चुपरि कै निर्धूम अगिन में सेंकै जब कुम्हिलाय तब रंग निकार के कान में डारै बिथा मिटै **अथ नाक रोग** भुखी लोहू पिउव को पीनस अरस विकार । रोग होत इमि नाक में मुनिजन यत्न विचार ॥ पाढी हरदी मुरेठी दारुहरदी पीपर चमेली पत्र सुवर्पासि तेल में पचावै नाश देय तो पीनस जाय **अथ मुख रोग** रुधिर सहित कफ कोप करि करत वदन तव रोग । जीभ दोष डर वासना फुरिया ग्वा संयोग ॥ कचनार की छाल औट कुल्ला करै तो मुख रोग जाय **अथ स्त्री रोग** काला तिल कै काथ कै सीतल होइ तब गुड़ डारि पीवै तो फिर रज होय शिवलिंगी के फूल १ केरा के छीमी कची १ खाय स्नान समय तो गर्भ रहै बिजौरा निम्बू के बीज दूध सों खाय तो स्नान समय रति संग गर्भ रहै रति की समय नागकेसर दूध से पीवै चौथे दिन स्नान करि संयोग करै पुत्र होय **गर्भ रक्षा** कुम्हार की माटी जल में घोरि पीवै तो गर्भ गिरै न सही **अथ सुख प्रसव** बिजौरा बीज जटा मासी मधु घृत से पीसि खाय तो जल्द लड़का होय गुंजा पत्र ७ जरि कै खंड ७ कटि में बांधै वा सरफोंका कै जर कटि में बांधै तो सुख प्रसौ होइ **अथ अपरा पातन** अंगूरी बार लपेट कै कंद में घसै तो गिरै चिचिंटा की

जरपीसि पगमें लेपकरै तो अपराजाय अथ प्रसूतरोग अंग मर्द ज्वर कंप अरु प्यास शोथ गुरु गात। सो प्रसूत दुखदेन को रहै त्रियन के साथ॥ पियै पीपरै डारि के रस मूली को काथ। सकल सूतिका रोग को तुरत लगावै हाथ अथ क्षीर वर्धन कादि सतावरि रंग तिय दूध संग जो खाय। तो वाके कुच कलस ते दूध बहुत अधिकाय॥ अन्य पीपरि दूध में चुरे के पीवै तो दूध बढ़ै अन्य विलारी कन्द के रस पीवै तो दूध होय गौ महिषी सम अथ प्रदर रोग अति असवारि ठरंग की अति मैथुन संयोग। तातें तियभग ते गिरत रुधिर प्रदर बिन भोग॥ चौराई मूल चाउर के धोवन से पीसि सहत डारि पीवै वा कुस के जड़ रसौंत चाउर धोवन से पीसि सहत डारि पीवै तो प्रदर नाशै अथ रंडा गर्भ पातन विधि॥ पुष्य नक्षत्र में धतूरे की जड़ लै कटि में बांधै तो गर्भ न रहै॥ तिल गाजर के बीज गुर कलौंजी गुर में मर्दि के खाय तो गर्भ गिरै अथ संकोचन भांग की वा मोचरस की पोटरी करि भग में राखै तो संकोच होय अन्य मोचरस के चूर्ण भंग में लगावै अथ लोम सातन अजवाइन अजमोदा हरताल संख चूर्ण सब पीसि तेल में पकावै सो लेप करै लोम झरै अथ बालक रोग। दुग्ध अन्न की दुष्टता होत बालकन रोग। ता को यह उपचार है समुझि करौ बुध लोग॥ जटामसी लोध ककूटनि हरद कलक तेल में पचाइ के नाभी जो पाकै तो लेप करै नीक होय॥ मुख रोगी अंवरा हरै सेंधव मधु घृत पीसि जीभ लेपै तो मुख नीक होय जो बालक दूध डारै तो भटकटैया के फूल २ मधु से घुटी देइ पीपरामूल पीपरि चाव सोंठ चीत चूर्ण कै मधु संग चटावै दूध पचै ज्वर औषधि कुटकी चूर्ण कै मधु संग चटावै तो ज्वर जाय अन्य काकरा शृंगी मोथा अतीस पीपरि चूर्ण कै मधु संग चटावै तो कास छर्दि ज्वर छर्दि जाय अन्य मोथा सोंठ अतीस हरै कुरैया

काढ़ा के पिआवै तो पेट पीर बन्द होय अन्य काकराशृंगी पीपरि अतीस मोथा चूर्ण के मधु संग चटावै तो अतीसार ज्वर खांसी जाय अन्य पुहकरमूल अतीस पीपर काकराशृंगी सब चूर्ण के मधु संग खवावै तो सब ज्वर जाय अन्य बंसलोचन चूर्ण के मधु संग चटावै तो बालक के कास स्वास जाय अन्य कुटकी चूर्ण के मधु में चटावै तो बालक की हुचकी और बमन मिटै अन्य मिश्री धवई के फूल पीपरि मिर्च चूर्ण के मधु संग पिआवै तो बालक के मूचरोग जाय अन्य मुख पाकै तो पीपरि की छाल पानी में पीसि मुख में लेपै नीक होय अन्य बालक रोवै रात्रि भरि सुख न पावै तो को बेल पत्र गूगुल हरड़ छुछुंदर की बीट धूप बनाय के धूप दे तो सुखी होय अथ सर्प बिषोपचार सूर्यराशि के हों तो सिरसा के बीज खाय तो बिष न चढ़ै सर्प नगीच न आवै अन्य जमालगोटा वूकि के निम्बू केरस की भावना देइ २१ फेरि गोली बनावै धरै युक के संग घसि के अंजन करै तो सर्प को बिष मिटै ॥ अथ बीछी के जमालगोटा पानी में पीसि लावै तो बीछी उतरै अन्य सिंगिआमाहुर जल में घसि दरि में लेपै तो बीछी बिथा नाशै सत्य अथ खन खजूरा दोहा ॥ मनसिल गेरू दोहरद कीयहि लेपन आइ । कै दीपक के तेल ते खन खजूर बिष जाय ॥ अथ मकरी हरद दोऊ मंजीट अरु गज के सर सुपतंग । सीतल जल सो लेप के करु मकरी बिषभंग अथ बिष खाय ना को घृत मधु सेंधव नीम के पान मिर्च ले खाय । बिष कहिये दै भांति के स्थावर जंगम जाय अथ तालू पीड़ा ज्यों सेमर के पेड़ में कांटे बहुत दिखाइ । मुख में फुंसिया होय त्यों जीवन पिड़िका आइ ॥ बरुन के क्वाथ कै मुख धोवै जाइ फेर चंदन मिर्च लेपै तो जुवान की पीड़ा जाय अथ कक्ष दोष बाहंगल अरु कांख पै कांधेपर

जव स्याम । पित्तकोपतेपीर जुत फुरिणा कक्षा नाम ॥ कूट सि-
लाजित देवदारु पीसि के फदकाय के लावै तो कक्षा जाय अथ
गुदारोग हगत निकसि आवै गुदा वेगनभीतर जाय । ता कोय
ह उपचार है रित सो देहु लगाय ॥ सज्जी सोंठ दही अमिलबेत
कल्क के घृत में पचावै सिद्ध घृत खाय तो गुदाभंगपीड़ा सब मि
टै सत्य ॥ अथ जमाल गोटा सोधन जैपाल भैंस के गोबर
में राखै दिन ३ फेर गरमजल ते धोवै फेर खरिल करै छिन फेर
नवीन खपरा लैके पीठी उहै लेपै जब तेल सोखै तब निरस धूरि स
म होय तो भावना देइ निम्बू नीर से तो शुद्ध सब योग्य ॥ इति ॥
जैपाल शुद्धि : सारक तीक्ष्न पित्त कफ हरन तुज्वर तत का
ल । उदर गुल्म अरु सीह हरण रता हर जैपाल अथ बमन
बिधि बरषा सरद बसंत में बमन विरेचन होय । करवावै पुनि
बैद नब बहुत सुखी नर होय ॥ रूस परवर नीम के पात लै का-
ढ़ा कै घृत संग पीवै बमन होय ॥ पित्ते ॥ मैनफर दूध संग पि
यै बमन होय ॥ बात कफे ॥ सेंधो पानी गरम कै पियै तो बमन
होय अर्जुन रोग जटामासी काढ़ा से बमन हो बिष दोष ॥
अथ विष सोधन कूटि के बिष बस्त्र मो पोटरी कै छोरि कै
दूध मेवा गौ के दूध में डोला यंत्र कै आंच दे पहर १ तो शुद्ध होय
गुण बलकरै जूड़ी सीतस्तंभ बात रक्त कुष्ट कास स्वास सीह
उदरोग बवासीर हरै औ मद अथ उप बिष सोधन मदार
धतूरा सेहुड़ कनइल करिहारी घुंघची अफीम सेंहुड मदार
कनइल ए सोधे नाहीं जात गुन बड़ा है अर्क कुष्ट खाजु दाद
बायु बिष कफ रक्त पित्त बवासीर नाशक सेंहुड़ रेचनदी
पन तीक्ष्ण मूल आम गुल्म उदर हफारा बिष हरै सीहा कुष्ट
वायु उन्माद पांडुनाशै । इति सेहुंड़गुणम अथ कनैल नेत्र
को कृमि कोढ व्रण कंडू हरन लघु सोइ अथ करिहारी सो
धन करिहारी गोमूत्र में धरिए खै पहर ८ तो शुद्ध होय । गुन।

कोढ़ शोथ व्रण शूल कृमि अरस हरै लघु लेपि करि हारी रक्त पित्त हर गर्भ गिरावन मेंपि अथ गुंजा सोधन गुंजा कांजी मे औरै पहर १ तो शुद्ध होय गुन नयनरोग व्रण पित्त कफ द्वन्द्व लुप्त हरि लेइ। बार बढ़ावै बहुत ही रवायलास करि देइ अथ अफीम सोधन अदरख के रस कै भावना देइ तो अफीम शुद्ध होय गुण बातपित्त को हरै करै ग्राही को सोषक। मद तृस्ना अरुदाह करै मोह क गुण पोषक ॥ करै धातु को स्तंभ कही पाचन अरुदीपन। अतीसार को हरै हरै संग्रहणी धरि मन ॥ क्रमक्रम सो सेवै जोजन तब गुण दायक होय वह। याविधि अफीम गुण लेइ सुनि बिनक्रम अति दुखदेइ वह ॥ अथ धतूरा सोधन धतूरा को बीज गौ मूत्र में भिजोवै पहर ४ फेरि मले कै बकला भिन्न करै तो शुद्ध होइ ॥ अग्नि करन अरु वमनज्वर हरत खासु व्रण जोर। कृम ज्वर हर गुण उष्ण बिष हर यह कनक कठोर ॥ अथ कुचिला शोधन कुचिला घृत में भूजे तो शुद्ध होय। कुचिला कटुती छन तिक्त उष्ण हरत है बात। कूकर को बिष कफ हरै अरु उनमाद बिलात ॥ अन्य हरै मिर्च सोंठि अवरा पीपरि पिपरामूर बाइबिरंग मोथा तज पत्रज ये समभाग जमाल गोटा निसोत भाग ८ मिश्री भाग ६ सब चूर्ण कै मधु सों गोली बांधै कर्ष प्रमाण खाय प्रातै १ जल शीत पीवै ज्यों ज्यों त्यों त्यों दस्त होय जब बन्द करना चाहै तब गरम जल पीवै बन्द होय तस्य गुण बिषमज्वर मंदाग्नि पांडु कास बवासीर भगंदर कुष्ट गुल्म गलगंड लीहा उदरदाह छर्दि प्रमेह नेत्ररोग बात अधमान मूत्ररोग पथरी इन रोगन को नाश करै अभयादि मोदक ॥ अथ सेहुआ दाद खाज गज चर्म चिकित्सा पचवै करुवे तेल में हरद आदरलंग। दादखाज गजचर्म मलि सेहुआ को करु भंग अन्य

किरवारो दोऊ हदरका कमाचि का पात्र करुवो तेल पवांर के बीज मठा के साथ सब औषधि पीसि के उबटन करै तो खाज दाद नरहै अन्य त्रिकुटा बीज पवांर के अरु मूरी के बीज । मठा मिलै समपीसि के पीठी तलगहि कीज ॥ यह औषधि को उबटनो करै अंगयह ख्याल । मेहुंआ पामा दाद को दूर करै ततकाल ॥ अथ नेत्र रोग चिकित्सा अजे पाल के दूध से घंसि कपूर जो नैन । फूली कटै छोटी बड़ी अरु पावै नर चैन ॥ अन्य पीपरि त्रिफला लोध अरु लाख सुसेंधो लोन घसि भगरा के रंग से करु गोली नर तीन ॥ घसि गोली अंजन करै यह गुन सस्त्र बिधान । तिमिर कांच कंडू फूली नयन रोग तम भान ॥ इति नेत्र रोग ॥ अथ घुमनी जवासा का काढ़ा कै घृत संग पीवै तो भ्रम जाय अन्य अबरा का रस मिश्री संग खाय तो भ्रम जाय ॥ अथ निद्रा जाय मधु घीव कै लार मिलै कै अन्जन करै तो निद्रा जाय तथा सेंधो सरसों मिलै गोमूत्र सों घसि नास देइ तो निद्रा जाय अथ निद्रा परै पिपरामूर गुड़ सानि के खाय तो निद्रा परै अन्य भूंजो भांग मधु मिलै कै खाय तो निद्रा परै अन्य भूंजी भांग भैंस के मुंह के फेने में पीसि पद के तरवा में मलै तो नींद आवै अथ मद विभ्रम खंड घृत मिलै के खाय तो मद विभ्रम जाय अन्य त्रिफला चूर्ण मधु मिश्री ले खाय वा गुड़ आदी खाय तो मद मूर्छा सोक मिटै अथोपविष बाधिक नाशौषध नरु बमन करै अन्य गोदूध खांड औरमि लै कै खाय अन्य विजौरा का रस पीवै तो धतूरा को बिष मिटै अन्य सरफोंका की जड़ पीसि पीवै तो हरताल खा ये का दोष मिटै अन्य करेमू की जड़ पीसि पीवै तो करि यारी खाये का मद मिटै अन्य सुहागा १२ घृत खाय तो बिष खाये को दोष मिटै अन्य हरदी दूध पीसि के पीवै तो कनैल का विष मिटै ॥ इति मद चिकित्सा ॥ अथ दाह

चंदन पीपर कपूर पानी में पीसि लेप करै तो दाह मिटै
अन्य संवरा जटा मासी बेर के पत्र चौरी के पानी से पीस
के लेपै पांव में तो दाह मिटै **अथोन्मादादिचिकित्सा**
सा पुहकरमूलदूधभातमधुमिलै के खाय दिन २१ तो उन्माद
जाय **अन्य** तगर मुलेठी कंजके गूदी दाख परवर की जड़
मजीठ बचा हींग सरसों कटैला हरदी केवाच चिफला
चीत बायभिरंग असगंध कंकोल मिचे नीम की छाल
मोथा सौफ कूट सोंठ बचा कंजा की गूदी सरसों सम
ले गोमूत्र में भिजोय राखै दिनराति फेरि पीसि गोली ब
नावै रुरबेर सम प्रातखाय १ तो बैलान नीक होय ॥
इतिप्रचेतनगुटिका ॥ **अथसरस्वतीचूर्णम्** कूट अ
सगंध सेंधो अजमोदा जीरा चिकुरा बच पाढ़ी हरदी सम
ले चूर्ण कै संखपुष्पों के रस में भिजोइ राखै दिनरात्र फेरि
सुखाइ के चूर्ण खाय १२ घृत मधु संग दिन तो बैलान नीक
होय बुद्धि निर्मल होइ **अथतैलम्** हींग सोंचर पीपरि
मिर्चू सोंठ २पै. घृत ४पै. गोमूत्र ६४पै सब घृत में पचै के खाय १२
तो बैलान नीक होय **अथभूतोन्मादचिकित्सा** एवि
दिन सिरसा का फूल उल्लू की बिष्टा ऊंट के बार कुत्ता की
बिष्टा बिल्ली की बिष्टा गंधक सफेद घुंघची समसै कूट क
रि तेलमें सानि कै धूप दे तो भूतोन्माद न रहै **अन्य** नीम
पत्र बच हींग केंचुल सरसों मिलै के धूप दे तो जुड़यत्न
छूटै **अथभूतरक्षामंत्र** ओं नमो हरि हिरण्य कश्यप व
क्षस्थल विदीर्णाय भूतप्रेतपिशाचकाय डाकिनीशाकिनी
कुलोन्मूलनाशाय स्तंभय २ समस्तदोषान्हन २ सचल
२ कंपय २ मथ २ हुं फट ठः ठः यहिरुद्रोज्ञयति स्वाहा ॥
जप १०० करै तो ब्रह्मराक्षस छूटै **अथअपस्मार** ऊंट
के पेशाब में मिर्च पीसि नाश देइ तो अपस्मार मृगी न रहै

अथ वात व्याधि हेत पाय अपनी कुपित वात गहतज
ब अंग । तब पीड़ा इमि होत है मसीवाय परसंग ॥ खुरसा
नी बच देवदारु सोंठ कटेला की जड़ सम भाग लेकाढ़ा कै
पीवै तो अंग पीड़ा जाय अन्य असगंध वा कुरथी की धनूए
कै मदार के पात बांधै तो पांव की पीड़ा मिटै अन्य हींग ची
त की जड़ का बकला १ सोंठ बड़ि १ गंधक सोधि कै १ सोचर
सेंधा १ हर्रे १ बंवरा १ बहेरा १ पिपरामूल १ गुड़ पुराना १ सु
हागा फुलै कै १ कुचिला ६ दूध में सोधि कै बकला छीलकै
सब चूर्ण कै निम्बू के रस से पीसि गोली बांधै प्रमाण मासा
भर का सो खाय सो के प्रातै तो सर्ब वात व्याधि जाय ॥
अथ लहसुनादि सर्ब वाते लहसुन १२ गो दुग्ध १० घृत १
जीरा २ सोंठ २५ पीपर २५ त्रिफला २५ पिपरामूल २५ गुड़
पुराना ५१ लहसुन दूध में औट के खोवा करै तो घी में भूनै म-
धुर होय तो गुड़ का पाग कै सब औषधि मिलावै चूर्ण कै के
घृत पात्र में धरै मात खाय तो सर्व पीड़ा पक्षाघात कोला
सब नीक होय अन्य लहसुन का रस ४ तिल का तेल २ में
पचै कै पीवै तो संधिगत अस्थिगत मज्जागत सब पीड़ा ना
शै अन्य कड़ तेल १ रेंडी कै १२ तिल का तेल २ धतूरे के र
स में डारि के रस १२ लौकी कै रस १२ गदहपूर्णा का रस २
रेंड की जड़ का रस १२ असगंध २ चकवड़ २ चीत सहिंजन
२ के बैज्ञा २ बरियारी १२ नीम के छाल १२ करियारी १२
बकायव कै रस १२ सरिवन १२ पिठिवन १२ कटाई १२ गु
रखुल १२ खंभारि २ पाडर २ बेल २ अगेथू २ इन्द्रानि २
सतावरि २ कायफर २ बिदारीकंद २ थूहर २ मदार २
सफेद कनैल १ सब का काटा कै के तेल में पचावै क्रम ने
त्रिफला २५ असगंध २५ रासन २५ धनिया २५ बच २५
देवदारू २५ कलौंजी २५ अजवाखार २५ साजीखार २५ सीला

योथा २५ लोन पांचौ २५ कायफर २५ भारंगी २५ नि-
सोदर २५ गंधक २५ पुहकरमल २५ सिलाजीत १२ वच्छ
नाग १२ सब औषधि पीसि कै डारि सिद्ध होय तौ सीसी में
धरै सो सीसी माटी मढ़ि कै भूमि में गाड़ै महीना बार निका
सि के देह मे लावै तो सर्वांग बात कोला पच्छाघात गृद्रसी
आमवामंडल बहिरो कुष्ट संधिगत बात विकार ये सबरो
ग जांय- स्नान खट्टा मिठा बादी परहेज़ दाल रोटी खाय
अन्य परहेज ॥ इतिविषगर्भ तैलम ॥ अथ कपबात ।
परवर की जड़ १२ असगंध १२ वच १२ अतीस १२ सब मैदा क
कैदही में खाय १२ प्रात तो कंपबात जाय अन्य पाए १२ गं
धक १२ मैनसिल १२ सब एकत्र की कड़ुवे तेल में खरिल करै
सो बस्त्र में लेपै बाती बनावै दृढ़ सो बाती लोहे के सूजा में
छेद के नीचे वारे पात्र में तेल चुवावै सो तेल अंग में लेपै तो
कंपबातजाय अथ रक्त बात हर्रा मोथा सोंठ काढ़ा कैपी
वै तो रक्त बातजाय अन्य रूसा गुचे रेंड की जड़ काढ़ा कै
रेंड के तेल संग पीवै तो रक्त बात जाय अन्य मंजीठ सरिवन
कराएल जेठी मधु मिश्री सम लै दूध में पीसि रेंडी तेलमें पच
वै सो तेल लगावै तो रक्त बात जाय अन्य मोम मंजीठ
एल रेंड के तेल में पचै कै लावै तो तथा भवति औषधमून
जुजाव रक्त क्षेम हित है बातरक्त का अथ उरस्तभरो
ग गदा पूर्णा सोंठ देवदारु भेला गुचे सरिवन पिठिवन
कटाई दोनों गुरखुलाबेल अगेथू सरिवन खंभारि पाड़रि
इनके काढ़ा तें उरस्तंभ मिटै अन्यधनसादितेलम तेल
कड़ुई तिल कै ११ रेंडी का ११ सरसों का ११ एरंड का ११ ककू
दनि का ११ सर्व तैल एकत्र की कराही में चढ़ावै जब खरहो
य तब धनेस चुरै कै डारै पचवै पुनः चमगोदर चुरै कै प-
चवै पुनः सिंगाए चुरै कै पचवै पुनः जंगली कबूतर चुरै

के पचवे फेरि तेल छानि के पुनि कराही में चढ़ावै तब ये औषधि माहुर १ करिहारी २ कूट २५ कायफर २५ कारीजीरी २५ लोन पांचौ २।२५ सज्जीखार २५ जवाखार २५ सेरा कलमी २५ हरदी २५ दारुहरदी २५ त्रिकुटा २५ तजपत्र २५ इलाइची २५ सब कल्क के पचावै सिद्ध होय तो ऊरुस्तंभ बाहुस्तंभ कोला पक्षाघात गृद्रसी कंप वात धनुर्वात एते रोगजाय वातविकार को न रहै **अथ आम वातचिकित्सा।** गदहपूर्ना जवासा हरदी दारुहरदी गुर्च कटा के गोमूत्र गुर मिलाय के पीवै तो आम वात जाय **अन्य** अंवरा १ पानी ४ में भिजोय एखै दिन एक तेहि पानी के काढ़ा पीवै दिन तीन आम वातजाय **अन्य** अंवरा के काढ़ा सोंठि रेंडी का तेल डारि के पीवै दिन ३ तो असाध्यौ आम वात जाय **अन्य** ऊटनी का दूध पीवै तो जाय **अथ आमवातादौ बृहत्सैंधवादि तैलम्** सेंधो हरो रासन सौंफ जवाइन साजीखार मिर्च कूट सोंठ सोंचर वायविडंग अजमोदा जीरा पुहकर मूल जेठीमधु पीपरि पैसा पैसाभर लै चूर्ण के तेल रेंडी का १६ सौंफ १६ चौगुने नीर में चुरै जो तुर्य्यांस शेष रहै १६ तो तेल में पचावे फेरि कांजी ३२ पचावै फेर दही का कतरा ३२ पचावै तब तेल छानि लेइ फेर कराही में चढाइ के जब खर होय तब चूर्ण डारि के ३ सो तल देह में लगावै तो आमवात जाय अग्निकर्म करै सर्व वात जाय कटि सूल संधी पीड़ा पार्श्व पीड़ा छाती पीड़ा अंसलेषमा ये रोगजांय **अथ शूल रोग** संखकी मैदा ३ सोंचर ३ हींग भूनी पीपर मिर्चे सोंठ सब मैदा करै गरम पानी में पीवै तो त्रिदोषशूल जाय **अन्न** पचै न शूल करै तो जवाखार मधु विजौरा के रस ते पीवै तो शूल जाय **अन्य** हरिन के सींग चूर्ण के खरबा में धर के भस्म करै सो भस्म मासा १ घृत में सानि खाय तो महा शूल मिटै **अन्य** रेंड़ी की जड़ का काढ़ा

जवाखार डारि पीवै शूल जाय ॥अन्य सोंठ का काढ़ा सोंचर हींग रेंडी का तेल मिलै कै पीवै तो शूल जाय ॥अन्य हींग जीरा सोंचर पीस पीवै तो शूल जाय ॥अन्य कुचिला २ लौंग २ सम लै आदी के रस ते खरल करै पहर २ फेरि गोली बांधै कर बेरा समान सो खाय तो शूल जाय ॥अन्य हरदी की पाती मिर्च पीस पीवै तो शूल जाय ॥अथ वह्नि कुमारीरसः जवाखार सज्जीखार सुहागा लोन पांचौ त्रिकुट त्रिफला लोहसार लौंग चीता चाव अनार कै वकै नारेण का सम भाग कै चूर्ण करै सो निम्बू के रस ते घोटै दिन ३ जंभीरी को दिन ३ गुंचे के रस ते ३ अमिलबेत के काढ़ा ते गोली चना प्रमाण बांधै चूक के साथ खाय तो आठौ शूल जाय ॥अन्य पारा शुद्ध १२ गंधक शुद्ध १२ विष शुद्ध १२ लौंग १२ जायफर १२ त्रिकुट ३ त्रिफला ३ हींग भूंजी जवाखार १२ साजीखार १२ सुहागा १२ सेंधो सोंचर पा गाटिकर १ शंख की भस्म १२ अमिली का रस १२ पीपर का खार १२ लटजीरा का खार १२ सब एकत्र कै अदरक के रस ते खरिल करै दिन १ पुनः जंभीरीरस ते खरिल करै दिन १ चना प्रमाण गोली बांधै खाय गोली १ दिन ४ टो असाध्य शूल नीक होय ॥अन्य सख की भस्म २५ हींग भूंजी १२ त्रिकट २५ सेंधो २५ सब एकत्र कै मैदा करै सो खाय तो पेट की पीर जाय ॥अन्य सेंधो चीत पीपर पैसा पैसा भर लै पीस पीवै ऊपर ते गरम जल पीवै तो पेट की पीर शूल जाय ॥अन्य सोंठ २५ मोथा २५ पीस गौ के घृत में गरम कै लेप करै तो शूल जाय सोरा गरम कै लेपै तो शूल मिटै ॥अथ उदावर्त हरावै सारवी सनाइ मकइइ सकपेचा की जड़ निसोथ मिर्च अमिलतास की गूदी विधारा दंतिशा की जड़ मूलषा दास सम भाग लै काढ़ा करै तेहि काढ़ा में जवाइन भिजवै ७ रात्रि सुखै सुखै फेरि घीकुवार के रस में भावना देइ ७

फेरि लोन पांचौ मिलावै सांभर सोचर साजीखार जवाखार सेंधो ये सब मिलाय के निम्बू के रस में भावना देइ सूखैतब खाय क्रमते पहिले मासे १ पुनः २ पुनः ३ पुनः ४ पुनः ५ खाय के गरम पानी पीवै झार होय जूड़ जल पीवै तो झार बन्द होय उदावर्त नीकहोय अन्य हर्रीई तज ई पीपरा मू ई मिर्च ई पत्रज ई पीपर ई मोथा ई भाएंगी ई अंबरा ई निसोत ई दंती की जड़ का बकला एस मको मैदा कर मधु से गोली बांधे झरबेर प्रमाण गोली खाय १ जूड़ पानी पीवै माहोइ गरम पीवै बन्द होय उदावर्त जाय अन्य जमाल गोटा १ कंकुसुहागा १ सोंठ ३ मिर्च २ गंधक औरसार ४ पारा ३ सब मिलैकै आदी के रस में खरिल करै पहर ४ गोली बांधै रत्ती प्रमान सीतल जल के साथ पीवै तो झार होय दही भात खाय तो बन्द होय अन्य जमाल गोटा रेंडी की गूदी हर्रा सुहागा भूजा जवाखार सम भाग लै चूर्ण कै सब की समान मिर्चा मैदा करै एकत्र मिलाय खाय रत्ती चार ४ गरम पानी पीवै तो झार होय उदर बिथा का जुल्लाब लौकी का गूदा सूखा सेंधो हरदी निसोत हर्रा बैगनी सम भाग मैदा कै टंक १ खाय गरम जल पीवै जुल्लाब होय दही भात खाय तो बन्द होय ॥७॥ अन्य जवाद्रन मासे ६ रेंडी की गूदी तोला १ पुराना गुड़ तोला १ मिलाय के खाय उपरांत बीरा खाय झार होय ॥ अथ जुल्लाब को तूहल पारा भांग १० गंधक झंवरा सार १० सुहागा भूजा १० सफेद फूल के अंकोहर की गूदी १० जमाल गोटा २० पारा गंधक कजली कै के सब औषधि में मिलावै नव दंतिशा के कोटा ते खरिल करै पहर ४ तब छांह में सुखाय के समान ममाखी लाय के एक नारियर में राखै दिन सात आठयें दिन निकासि के फूल की थारी में राखै टेढ़ी कै कै कार्तिक बैसाख श्रावण के घाम में तो तेल अचैतव

कपरा में धरि निचोय लेइ सो तेल नाभी में लेप करै तो दस्त होंय और कंठ में लेप करै तो बमन होय फेरि चाउर धोय के पानी दूध चीनी पीवै और नीम के रस तें धोवै बन्द होय **अथ गुल्म रोग चिकित्सा** कुचिला कूट जवारवार सज्जीखार अजमोदा जवाइन बायबिरंग हींग सेंधो सोंचर पांगा सम भाग लै निम्बू के रस की भावना देइ ७ फेरि गोली बांधे करबेरा सम खाय गोली १ तो गुल्म शूल मिटै **अन्य** जमालगोटा १२ लौंग १२ मोथा १२ दालचीनी १२ इलाइची १२ सुहागा १२ हींग भूजी १२ जीरा स्वेत १२ जवाइन १२ सोंठ १२ तेजपात १२ सेंधो १२ सार १२ अबरक १२ पारा १२ गंधक १२ मिर्च १२ सब एकत्र कै छेरी के दूध से घोटै वा अदरा के रस तें खरिल करै पहर ४ गोली बांधै चना प्रमान एक गोली खाय तो गुल्म शूल सीहार कछुई बंध गोष्टी सब पेट की बिथा मिटै **अन्य** जंभीरी कै रस १०० जीरा २५ साभर २५ जवारवार २५ सोंचर २५ पांगा २५ ढिकरा २५ राई २५ कूट २५ अजमोदा २५ जवाइन २५ ये सब कूट के एक पात्र में भरि के ऊपर निम्बू के रस भरदे मुख बन्द कै घामे धरै जब रस सूख जाय तो मैदा करि खाय प्रमान ६ तो गुल्म शूल न रहै ॥ इति उदररोगेनि **मूद्रवः अन्य** जंभीरी का रस १०० हींग भूजी २५ सेंधो २५ सोंचर २५ साभर २५ सरसों २५ त्रिकुटा २५ जवाइन २५ सब चूर्ण कै सीसी में धरि ऊपर निम्बू का रस भरै मुख बन्द कै अन्न में वा भूमि में गाड़ै दिन १० बाद खाय मासे ४ तो सर्व रोग उदर के जांय ॥ इति जंभीरी संधानम उदररोगे ॥ **अथ कुमारी द्रवः** लौहचून ८ जवाइन १ अमिलबेत १ जीरा २ सोंठ १ पीपर १ मिर्च १ बहेरा १ पिपरामूल २ मूद १ सौंफ १ तेजपात १ अंबरा १ चीत १ हींग भूजी १ हरा १ अजमोदा १ सोंचर १ धनिया १ बाइविड़ंग १ सोरा कलमी १ गु रु च

घीकुवार का रस १०० सब चूर्ण कै माटी के पात्र में भरि ऊपर से कुमारी का रस भरिदेइ मुख बन्द कै भूमि में गाडै दिन २१ फेरि निकासै वस्त्र से छानि लेइ सो रस सीसी में राखै खाय मासे ४ रोज तो उदर रोग विथा जाय ॥ अथ अदरक द्रव; त्रिकटु १२५ हींग भूनी १२ सुहागा २५ चीन २५ लौंग २५ हरा २५ सेंधो २५ सब की मैदा कैता में निम्बू का रस ७ १ डारि फेरि आदी का रस ७ १ दही ७ सर्व एक सीसा में भरि मिलाइ कै खाय मासे ४ भोजन के उपरान्त खाय तो उदर के सर्व रोग जाय संग्रहणी अतीसार जाय भूख बहुत बढै ॥ अथ वज्र खरोस; उदर रोगी पांगा २ सेंधो २ सोंचर २ सांभर २ सुहागा २ सज्जीखार २ जवाखार २ सब मैदा कै मदार के दूध में खरिल करै पहर ४ फेरि मदार के पात में लपेट कै हांडी में भरि के जरावै गजपुट आंचरै कै जब भस्म होय तो ये औषधि मिलावै त्रिकटु २५ त्रिफला १२५ जीरा स्वेत १२५ हरदी १२५ चीता २५ बिधारा २।२५ ये सब मैदा कै मिलावै सो रोज खाय मासे ४ तो उदर के रोग सब जाय ॥ अथ सीह चिकित्सा। सुहागा १२ मुसबरा १२ मैदा कै रूसे के पात के रस ते गोली बांधै मासा १ भर की सो खाय तो सीहा जाय ॥ अन्य पीपर १२ सुहागा १२ चूर्ण कै खाय मासे १ कुकुरौंधा रस में नो सीहा जाय ॥ अन्य त्रिकटु हर्रे सम भाग ले अमलतास के काढा में घोटै पहर १ फेरि थूहर के दूध में घोटै पहर १ तब गोली बांधै मासे १ सो खाय मधु संग दिन ७ पथ दही भात खाय तो जलोदर कोदर गुल्म सीहा न रहै ॥ अथ मूत्र कृच्छ चिकित्सा कुटकी सेंधो लटजीरा की भस्म पाखानभेद इन का काढा कै पीवै शिलाजीत शक्कर मिलाय के तो मूत्र कृच्छ जाय ॥ अन्य हर्रे गुरुच अमलतास पाखानभेद जवासा इन को काढा पीवै तो मूत्र कृच्छ अपस्मार जाय ॥ अन्य इलाइची पीपर जेठी मधु पाखानभेद

रेतुका गुरवरू रूसा रंड की जड़ समभाग काढ़ा के पीवे तो मूत्र कृच्छ अपस्मारी जाय **अन्य मूत्र कृच्छ पथरी चिकित्सा** बरुन की छाल ४ पानी १६ में चुरवैजब चौथाई वाकी रहै तबछानि लेइ सोकाढ़ा कराही में डारि के गुड़ डारै ४ तोहि मा सोंठि १ कंकरी के बीज १ गुरवरू १ पीपर १ पाषान भेद १ दूब १ कुम्हड़ा के बीज १ खीरा के बीज १ हिनोला के बीज १ मुनक्का १ इलाइची गुजराती १ हर्रा १ बाइबिरंग १ सब मैदा करि डारै उतारि कै सो खाय प्रमाण १ प्रात सांझ १ तो मूत्र कृच्छ पथरी न रहै **अन्य** पीपर २५ हर्रा बैसाखी २५ सिलाजीत २५ चीतकी जड़ २५ खांड़ में चूर्ण कै खाय २५ तथा **अन्य** तज पत्रज इलाइची नागकेसर लौंग तालीस मोथा रक्त चंदन गुरवरू बंसलोचन जायफर जीरा स्याह त्रिफला खस मोचरस अतीस कंजा की गूदी हर हरा की जड़ समभाग लै चूर्ण करै दूनी खांड़ मिलाइ के खाय मूत्र कृच्छ अपस्मारी पथरी नीक होय **अन्य** पाखान भेद १२ दाख २ मिश्री ४ एक में खरिल करै गोली बांधै २ सो धान के पानी में धोय के खाय अपस्मारी नीक होय **अथ पेसाब बन्द की दवा** मूस की लेंड़ी माढ़ा में पीसि गरम कै नाभी ते पेड़ू ताईं लेपै तो पेसाब खुलै **अन्य** रेह गरम कै लेपै तो खुलै **तथा** टेसू के फूल पीसि के पीवै तो खुलै **अथ प्रमेह चिकित्सा** हरदी की मैदा ६ मधु मिलै कै खाय अंवरा के रस के संग खाय तो प्रमेह नीक होय **अन्य** अनार की कली मुख बंद २५ खैर दूधिया २५ मैदा कै दूनी खाड़ मिलाय प्रात ही खाय प्रमेह जाय **अन्य** गुरवरू बड़ा के पंचाग १ काढ़ा कै पाखान भेद मासा १ मिलाय के पीवै प्रमेह नीक होय **अन्य** त्रिफला दारु हरदी इन्द्राइन की जड़ मोथा इनको काढ़ा मधु मिलाय पीवै तो प्रमेह नीक होय **अन्य** चंदन स्वेत २५ खस २५ नागकेसर २५ बरियारी के बीज २५ इलाइची २५ पाढ़ी २५ आमकी

गूदी २५ जटामासी २५ इन्द्रजव २५ मंजीठ २५ अनारकी कली २५ मोथा २५ नगवरी असगंध २५ पद्माख २५ समकै मैदा कै दूनी मिश्री डारि खाय १२ प्रातःऊपर ते गाय का दूध पीवै तो प्रमेह बन्द होय **अथ प्रमेहवंगेश्वरोक्तः** पारा शुद्ध १ सिंगरफ गंधक अंवरासार शुद्ध रांगा हरिन खुरी १ सो लोहे की कल्छी में चढ़ावै जब गरम होय तब पारा डारै तब उतारि कै भुंइ में डारि देइ फिर गंधक डारै खरिल करै पहर ४ मुरै कै सीसा में भरै सो कपरौटी करै दृढ़ बहुत तब हांडी में आधी बालू भरै फिर सीसी धरै ऊपर फेर बालू भरै मुखलै फेरि आंच देइ पहर ६ पहिले दीपक आंच फेरि चंडाग्नि आंच देइ फेरि स्वांग सीत होय तो रस निकासै सो रस खाय रत्ती २ भरि इलाइची पान कै संग खाय ऊपर ते यह चूर्ण खाय ॥ असगंध नागरमोथा हर्रा बिलारी कंद सतावरि गुर्च का सत जेठी मधु बहेरा पत्रज गुखरू मोचरस केवांचके बीज पीपर केरा की जरि सम भाग लै तिह की बराबर मिश्री डारै १२ गी के दूध में डारि कै पीवै तो बीसौ प्रमेह नीक होंय मूत्र कृच्छ मूत्रघात अपस्मारी बहु मूत्री एते रोग जांय ॥ इति धन्वन्तरप्रकाशात् ॥ **अथ प्रमेह शृंगार अभ्रक** अबरक १ पारा सिंगरफ को टंक १ सोधा गंधक टंक १ सिंगरफ का रस टंक १ कपूर १ सुगंधबाला जटामांसी लौंग नागकेसर तज कूट जावित्री तालीस गज पीपर तेजबर धवइ के फूल यै ठंक टंक त्रिफला त्रिकट मासे दुइ दुइ गुजराती इलाइची टंक ३ सब मैदा कै फेरि पानी से गोटै पहर १ फेरि गोली बांधै चना सम सो प्रात खाय गौ सी ४ फेरि बीरा खाय १ सोंठ खाय गांठ १ गोदूध चीनी पीवै मध्यान भोजन करै तो प्रमेह बन्द होय अपूर्व है **अथ सोथ चिकित्सा** गदापूर्णा नीमका गाभा परवर सोंठ कुटकी हर्रै गुर्च दारु हरदी सम भाग लै काढ़ा कै पीवै तो सर्वांग सोथ नीक होय **अन्य** गेरू केंवै पाकारस

छेरी का माठा मिलाइ के लेप करै तो सोथ मिटै अन्य पीपर १२ चीत १२ सोंठ १२ मोथा १२ जीरा १२ कटेआकी ज़ड १२ पाढी १२ हरदी १२ गजपीपर १२ मूढ १२ जटा मासी १२ सब चूर्ण के ताते जल संग पीवै १२ तो सोथ मिटै अथ शोथ पीडा चिकित्सा कुढकी १२ सुहागा १२ सोंठ १२ गदापूर्णा १२ देवदारु १२ सब की मैदाकरि कांजी तेबांटि करलेपकरै तो सोथ की पीडा मिटै अथ तैलम् तिलकातेल १ रासन २ गदापूर्णा २ रेंड की जड़ २ मूरी कारस १ कूट १ कायफर १ सोंठ १ सबऔषधिमूरी के रसतें पीसि कै तेल कराही में चढावै खर होय तो औषधि पचावै सो तेल लगावै तो सर्वांग सोथ मिटै अथ अंडवृद्धि त्रिफला काढा कै गोमूत्र डारि पीवै तो अंडवृद्धि मिटै॥ अथ अंडवृद्धि चंसुर रेंडी कातेल घी मिलायके पीवै तो अंडवृद्धि मिटै अन्य जीरा सेंधो रेंड की जड़ कूट हुरहुर बच समभागलै कांजी तेपीसि लेपै तो अंडवृद्धि जाय अन्य गायका घी १ सेंधो २५ मैदा कै घी मिलायके धोंधा माथरै घामे दिन ७ बाद लेपै तो अंडरोग मिटै अन्य तैलम् हरताल नाव की २५ सिंगरफ २५ संचरा २५ गंधक २५ तेलतिलका ४ संभालू के रस मे सबपीस के पचावै सो तेल लेपै ऊपरते जैत के पत्ता गरम कै बांधै तो कुंडरोग मिटै अंडवृद्धि न रहै अन्य नीमकी छाल लहसुन मांजूफल चीत हरताल सम भाग लैमीके माठा में पीसि लेपै और ऊपर तेरंड के पत्ता बांधै तो अंडवृद्धि मिटै अन्य वेलकी जड़ पाडर कै चीत कटेआ दोनो जवाखार कंजा सहिंजन निसोथ कैथा भेलावां विडंग सोंठ पीपर मूढ साजी जवाखार लोन पांचौ सब चूर्ण कै ताते जल से वा मद्य से पीवै १२ तो अंडकोश अंडवृद्धि मिटै अथ गंडमाला चिकित्सा त्रिफला २५ कचनार २५ गुग्गुर ४ चूर्ण कै मधु संग खाय तो आरोग्य होय अन्य तिल का तेल ८ कराही में चढाय खर करै तो छछूंदर बोढी बाटीडाले

जब जरै भले तो उतारि के घोटै घरी १ सो तेल लेपै तो गंडमाला न रहै **अन्य** भेलांवां कौसीस चीत दंती की जड़ गुड़ समभा गलै सेंहुड़ के दूध वा मदार के दूध में खरिल करै सो लेपै तो गंड माला न रहै **अन्य** कारे सांप की भस्म घी में सानि के घा व में लगावा करै तो अपची गंडमाला न रहै **अथ भगंदर चिकित्सा** हरदी चमेली के पात ६ सोंठ ६ गुर्च जल तै पीस लेप करै तो आराम होय **अन्य** हरदी अंवरा दंतिशा पीसि लेपै तथा **अन्य** सिंगरफ के पारा २ सोधी गंधक ४ दोनो खरिल करै पहर ४ फेरि गंधक प्रसारिण के रस तै खलै दिन भरै सरस डारै १४ बेर सो यही भांति खलै दिन ७ फेरि सीसी में भरै सो मुख बंद कै खात खोदै हाथभर का लम्बा चौड़ा तामें घोड़े की लीद भरै बीचमें सीसी धरै फिर लीद से भरि के बन्द करै महीना २ राखै बाहर निकारै सो खाय रत्ती ४ पानमें बर्ष दिन पर्यंत तो भगंदर नीक होय नाडीव्रण नासूर वल्मीक ये रोग मिटैं जरूर कै ॥ इति वल्मीक चिकित्सा ॥ हथेरी बगल कांध गटई संधि जंघा इन जगहों में छिद्र होय नासूर की नाईं बहै वा सूजा रहै सो वल्मीक है **अथ व्रण रोग** त्रिफला २ पीपर २ गूगुर २५ कूटि कै खाय १२ तो व्रण जाय **तथा** त्रिफला काढ़ा कै गूगुर डारि ६ पीवै नीक होय **अन्य सद्यो व्रण** वरियारी का रस घाव पर निचोवै तो पीड़ा मिटै **अन्य** केवैया की जड़ पीसि घी में भूजि वस्त्र में पोटरी कै घाव सेंकै वा चोट सेंकै तो पीड़ा मिटै **अन्य** सरफोका की जड़ वा सहदेई पीसि तेल में चुरै कै फाहा देइ तो घाव नीक होय **अन्य** नीला थोथा १२ सिंगरफ १२ मुरदासंख १२ खैर १२ मजीठ १२ मोम १२ कडू तेल १२५ मां चुरै कै फाहा देइ तो घाव पूरै पीड़ा मिटै **अथ अग्नि मांजरा का दवा** मगाखी का लेप करै **तथा** घी मां चुरै कै मोम लगावै **तथा** जब जराय के पीसै सो तेल में

फेंटि लेपै तो जरे की पीड़ा नीक होय **तथा** नीम का रस कुट
अंवरा पीसि लेपै **तथा** कूद जेठी मधु चंदन रेंड के पात दूध
सों पीसि लेपै तो जरा नीक होय **अथ वलात गरमी चि**
कित्सा ईंगुर २५ जायफर ३ तिहमें कोरि कै भरै फेरि माटी से
लेपट सुखावै फेरि भीक मां डारै फेरि बूकि कै सुहागा २ मा
जूफल १२ बूंकि मिलावै पानी तें गोली बांधै सो एक बटी हु
का में लेइ दिन ३ तो गरमी जाय **अन्य** मिर्च १२ लौंग १२
रूमी मस्तगी १२ शकरकरहा १२ वायभिरंग १२ भेलावा
अजमोदा १ सब के सम गुड़ डारै कूटै ता की गोली बांधै मा
से २ खाय साम का पथ्य दूधभात खाय गरमी न होय **अन्य**
लौंग इलाइची १२ गुज १२ दाख मुनक्का ६ मिर्च ६ जमालगोटा
की गूदी १२ बेरी का बांदा स्याह गुड़ पुराने तें गोली बांधै भर
बेरी सम सो खाय पथ सूखा भात खाय प्रात तो गरमी जाय
अन्य शेख तोला २ चीनी तो २ पीसि पुरिया करै २ सो खाय ऊपर गर
म पानी पीवै नीक होय **अन्य** सिंगरफ मासे ४ माजूफल
मासे ४ शकरकरहा मासे ४ सुहागा मासे ४ सब की गोली बां
धै ४ सो एक गोली हुक्का में भरि के लेइ साम को रात्रि भर सोवै
न प्रात दूध भात खाय तो नीक होय **अन्य** कमीला ६ लौ
ला धोया ६ राई ६ तिपुरी ६ कौड़ी की भस्म ६ सुपारी की
भस्म ६ हरदी की भस्म ६ मैनफल ६ बिजौरा की पत्ती ६ सम
पीसि के घी गरम होय तो पचावै फेरि उतारि कै घोटै पहर १
सो लगावै तो अच्छा होय **तथा** तूतिया स्ती २ पपरी खैर २५
मुरदासंख २५ सबनी मकै रस तें घोटै सो वस्त्र में लेप कै बांधै
तो गरमी जाय **तालू फूटे की चिकित्सा** खैर ३ कपू
चिनिया २५ लौंग २५ सुपारी चिकनी २५ बंसलोचन २५
कंकोल २५ सब मैदा के पानी में गोली बांधै भर बेरी सम सो
एक गोली मुख में राखै जब चुकै तब सो डारै यही तरह ता

नीक होय अथ सोजाकचिकित्सा सतावरि २५ गुरुच २५ केवाचके बीज २५ सिंहारा २५ नागकेसर २५ तालमखाना २५ बीजबन्द २५ बबूल का गोंद २५ केसर २५ छुहारा २५ सिंगरीबबूल की २५ दूधबरगद का २५ सब के बराबर मिश्राचूर्ण कै खाय २५ सहत में तो सोजाक न रहै अन्य खीरा के बीज २५ ककरी के बीज २५ अजमोदा २५ मुरेठी २५ बदाम २५ गेहूं का सत्त २५ पोस्ता के दाना २५ बबूल का गोंद २५ कतीरा २५ बिरोजा २५ गेरू २५ अफीम मासे १ सब मैदा कै केला के रस से गोली बांधै मासे ३ सो खाय प्राते तो सोजाक जाय अथ बिन्द कुष्ठादि बकैना के फल २ सोंठ २ चूर्ण कै समखांड गौ के दूध के संग खाय २५ तो बन्द कुष्ठ मिटै अथ अदृष्ट फोड़ा की औषधि अफीम २५ गोकीनेनू ४ हुरहुर ६ केवैका रस ६ एकत्र करै गरे पहर ८ सो लगावा करै तो नीक होय अन्य भिलौंजी सेंधो कसीस चीत पिपरामूर समभाग लै मैदा कै सेंहुड़ और मदार के दूध सौं घोटि कै लेप करै तो फूटि बहै तथा नींब की पाती तिल पीसि के लेप करै तो मज्जानि कसि परै तथा नींम पत्र तिल दंती की जड़ निशोथ सेंधो सब मैदा कै मधु में सानि लेप करै तो अदृष्ट फोड़ा नीक होय अन्य नीम पत्र म्योड़ी के पत्र कंजा की गूदी पानी से पीसि लेप करै तो घाव के कीड़ा जा तरदें और पूरि आवै बतौड़ी की दवा मूंती का चून सुमित मान पानी तें पीसि सीकं तें लगावै ऊपर तें नींम का पात बांधै प्रातही छोड़ै ऐसे दिन ३ करै तो बहिजाय तथा पुहकरमूल कूट मिर्च बच सेंधो हरदी सम भाग पीसि लेप करै तो मांस की गांठि मिटिजाय अथ मांस वृद्धि सिंगरफ १२ हरताल १२ मुरदासंख १२ तूतिया १२ मोम १२ नीम के तेल में मलहम कै फाहा धलावै तो दृढ़ गुल्म नीक होय अन्य नीला थोथा चौरेंठ सातीखार हरदी सोना माखी गेरू नीसादर सब पीसि लेप करै तो मांस

की वृद्धि गांठि मिटै **तथा** साजीखार चूना लेप करै तथा आ-
दी कारस चूना लेप करै तो मांस वृद्धि बतौरी जाय **अथ नासूर**
सहिंजन १२ तगर १२ गुजराती इलाइची १२ देवदारू १२
जेठीमधु १२ पुहकरमूल १२ रक्त चंदन १२ सोंठ १२ मिर्च १२
सब मैदा की गाय के घी में पचावे लगावे तो नासूर नीक होय ॥
अथ सब फुरिया अंबरा ६ हर्रे ६ तूतिया ६ कमीला ६ मु
रदा संख ६ भूजी रेंडी की गूदी ६ सब मैदा के करू तेल में फेंटि
लगावे तो सब फुरिया नीक होय **तथा** हरदी २५ दारुहरदी २५
कमीला २५ तूतिया २५ इटकुहा २५ सब मैदा के करू तेल में पु
रे के लगावे तो फुरिया नीक होय **अथ कौसीसाद्यं घृतम्** ॥
कसीस १२ हरदी १२ दारुहरदी १२ मोया १२ हरताल १२ मैन
सिल १२ कमीला १२ गंधक १२ बायभिरंग १२ गुरु १२ सोमरा
वे १२ कूट १२ तूतिया १२ पिपरसरसों १२ सेंहुर १२ धूप १२
रक्त चंदन १२ रिंवा १२ नीमपत्र १२ कंजगूदी १२ सरिवन १२ ब
च १२ मजीठ १२ जेठीमधु १२ जटामासी १२ सिरसाछ १२
लोध १२ पद्माख १२ हर्रे १२ चकवड १२ सब मैदा करै और
घी ८ धोवे १०० बेर सो ताम्र पात्र में धरै और सब औषधि मि
लाय कै घा में धरै दिन ७ नीम के सोंटा से चलावे दिनभर में
पांच सात बेर अठयें दिन सीसा में धरै और लगावे तो कैसि
उ फुरिया होय सोन रहे और कुष्ट जाय दाद खाज बिचर्चि
का विसर्प विस्फोटक बात रक्त सिर के फोरा व्रण सोथ भगंद
र लूता मकरी बफौरी दद्रु गूंथी इन सब की नाश करनाहै न
हीं रहते **अथ बेंवाई** आदि जिह ते हाथ पांव फटैं
पुराने भेड़ा की बसा मिर्च की मैदा २५ मिलाय के लगावे सांझ
विहान और सें कै तो हाथ पांव की बेंवाई न रहै **अन्य** पारा
१ तुलसी पत्र में धरै सोधि लावा करै मलमल तो नीक होय
बेंवाई ॥ **अपरस** औ लावा को विसर्प तिह को लक्षण

सबदेह की खाल उचरि जाति है बिसर्प ते रंग लाल ह्वै जात है पचपचात है और यही को सुर्ख बाद कहत हैं और यहीते सरकरा बुन्द नीक होत है ॥ लक्षण ॥ देह हाथपांव में गिरह परिजात है सो फाटि के बहत है मधु की सम की घीउ की सम वा चरबी के माफिक **अथ अपरस उकौता की चिकित्सा** ईंगुर १२ सेंदुर १२ सेंधो १२ सुहागा १२ मोम १२ फटकरी १२ रेंडी का बौर १२ सबकी मैदा कै भेंड़ी के घी में मलहम करै कचासों लगावै और बेरी की लकड़ी से वारि के सेंकै तो अपरस उकौता जाय **अथ उकौता** चना की दाल सरसों समभाग लै पीसि के कुनकुन कै लगावै दिन २ रेंडी के पात से बांधै प्रातै दही से धोवै तो उकौता नीक होय **अथ दाद खाज चिकित्सा** पारा १ गंधक १ तूतिया १ पहिले पारा गंधक मिलै के घोटै घड़ी २ फेरि लीला थोथा मिलाय के कराही में डारि गाय का घीउ १२ भरि जस्ता से घोटै दिन ४ पचयें दिन लगावै तो दाद और खाज और गजचर्म ये रोग मिटैं सत्य **अथ दाद चिकित्सा** गंधक नैनूसा २५ अफीम २५ करायल २५ फिटकरी २५ मिर्च १ कसौंजी की जड़ १ चवराई की जड़ १ निम्बू के रस ते घोटै पहर ४ गोली बांधि फेरि निम्बू के रस तें घोटि लगावै तो दाद जाय **अन्य** माजूफल २५ धूप २५ सुहागा कच्चा २५ गंधक छैलछुरा २५ सब पीसि के गोली बांधै सोपानी से घसि के लगावै तो दाद न रहै **अन्य** इलाइची बड़ी का बकला १ सूती का चूना १ फोकली की भस्म कै दोनी भस्म मिलै पानी में घोटि के लगावै तो दाद जाय सत्य **अन्य** अंवरा धूप चोरवी चक वड के बीज सिंगिया माहुर २५ सम पीसि के पानी में डारि राखै दिन ८ नवयें दिन से लगावै तो दाद न रहै **अन्य** तेल चमेली का ॥ सुहागा २ तेल में फेरि घामे धरै दिन ३ फेरि लगावै तो दाद न रहै सत्य **अन्य** रक्त चंदन

नि तोदा ६ दूधिया खैर ६ अफीम ६ मिर्च ६ नूतिया ६ चकव
ड के बीज ६ सब की मैदा के कागदी निम्बू के रस तें गोलीवां
धै सो गोली कागदी निम्बू के रस ते घसि के लगावे तो दादनी
क होय अन्य मदार की जड़ ३ रेंडी की जड़ ३ भटकटैया की
जड़ ३ चकवड की जड़ ३ म्यौड़ी की जड़ ३ असगंध की जड़ ३
धतूरे की जड़ ३ छेरी की लेंड़ी ३ तिल का तेल ३ सब का कूटै
पाताल यंत्र से तेल निकाले सो तेल लगावे तो दाद न रहै अन्य
खाज की सुहागा २५ मिर्च २५ कमीला २५ नूतिया २५
सब मैदा के घी में पचै के लगावे तो खाज न रहै अन्य पारा
१२ गंधक १२ मैनसिल १२ नूतिया १२ सब मैदा के करू तेल
में फेंटि के लगावे न हाय साफ का खाज जाय अन्य खैर सु
हागा फटकरी नूतिया सज्जी कमीला सम भाग ले मैदा के
तेल में पचावे सो लगावे तो अपची खाज न रहै अन्य गंधक
मैनसिल हरताल हरदी दोनो सज्जी सम भाग ले गो मूत्र सों पी
सि के तेल में चुरवे सो तेल लगावे तो दाद खाज पाप विचर्चि
का न रहै अन्य रद्दी रस पीती के कुसुभ के मैदा करू तेल
में फेंटि लगावे तो पीती जाय अन्य सेंधो के मैदा करू तेल में
फेंटि लगावे तो रस पीती जाय ॥ गुड़ १२ जवाइन ६ खाय तो
नीक होय अन्य सरफोंका की जड़ का बकला २ जवाइन २
हरदी २ मैदा के खाय नीक होय रस पीती न रहै अन्य ।
हरदी १२ जवाइन १२ घुंघुची १२ सब मैदा के करू तेल में चु
रवे सो तेल लगावे तो रद्दी रस पीती न रहै अन्य छंजन
की मनुष्य की खोपरी चीते की जड़ नीम की लकड़ी ये
तीनो चंदन की माफिक रगड़ के लगावे तो छंजन न रहै
अन्य गुजराती वकुची सफेद घुंघुची ३ कसीस मेहदी के पा
त सब पीसि लेप करै तो छंजन जाय अन्य अमिली की
छाल की भस्म रेंडी के तेल में फेंटि के लगावे तो छंजन जाय ॥

अन्य खेत गुंजा एक गिरगिटान का रक्त तेल में पचै कै लगावै तो छंजन जाय अन्य सांप करिया की भस्म भेड़ी के घी में फेंटि के लगावै तो छंजन जाय अन्य अंजीर की जड़ का वकला मिर्च ६ हरताल १२ वकुची के बीज २५ सब कलोर गाय के मूत्र से पीसि लेप करै तो छंजन जाय **अथ बहिरी रक्त मंडल की चिकित्सा** लहचिचिरा की भस्म चूना गंधक ३ मिले के लेपै सुन्न मिटै घाव में तिल का तेल लेपै ऊपर तें भंगरा की भस्म से पै गूगुल १६ गुर्च १६ त्रिफला ४८ इनका काढ़ा करै तिहमां गूगुल भिजै रात रिन फेरि पीसि के छानि लेइ सो कराही में डारि सौटै जब पाग सम होय औषधि डारै त्रिफला गुर्च १ त्रिकुट ३ वायभिरंग १ जमाल गोटा की गूदी १२ चिरायता इनकी मैदा कै डारै फेरि घृत के पात्र में धरै खैर काढ़ा के संग तो बहिरी मंडल कुष्ट नरहै तथा चूर्ण सरफोका ४ जवाइन ४ मजीठ ४ खांड १६ सब मैदा के खांड मिलाय खाय १२ प्रातै दिन ४८ तो अवश्य बहिरी मंडल नरहै **तथा चूर्ण** सरफोका ४ हरदी ४ जवाइन ४ मजीठ ४ खांड १६ सबै मैदा के खांड मिलै के खाय १२ मातहि दिन ४८ तो बहिरी मंडल नरहै **अथ कुष्ट चिकित्सा** निरगुंडी की जड़ गोमूत्र में चूर्ण कै पीवै तो हित है अन्य भेलांवां २ गुर पुराना १ गोघृत ४ गोदुग्ध ४ त्रिकुट २५ तज १२ पत्रज इलाइची १२ नागकेसर १२ खेत जीरा १२ धनियां १२ सब को मैदा कै कपर छान करै और भेलांवां का मुंह्डा छोलि कै काढ डारै सो पानी ३८ में चुरवै जब अष्टावशेष रहै तब काढा छानि लेइ सो पानी औ दूध घीउ कराही में खोवा करै जब पाग के माफिक होय तब गुड़ डारै मिलावै फेरि औषधि कै मैदा डारै उनारि कै सो घृत के पात्र में धरै प्रातः खाय २५ तो सर्व कुष्ट जाय ॥ इतिभल्लातकतैलं सर्वकुष्टे ॥

अथ मरिचाद्यं तैलं सर्वकुष्टे तेल करू १ मिर्च २ निशोथ २ देवदारू २५ हरदी दोनों १ जटामासी २५ रूट २५

रक्तचंदन २५ हरताल तावकी २५ वकुची २५ बच बड़ी २५ बच छोटी २५ ककूंदनि २५ बिष २५ दंतिआकीजड़ २५ इंद्रारुनि की जड़ २५ कनैल की जड २५ बरिआरा की जड़ २५ मोथा २५ चाव २५ सिरसा का बीज २५ कुरैया की छाल २५ नीम की छाल २५ सरिवन २५ पिठिवन २५ गुर्च २५ सेंहुड़ का दूध २५ कंजा की गूदी २५ खैर की छाल २५ वरिआरी की जड़ २५ ककई २ जामुन २ गूलर २ कटूवरि २ अनार २ बरगद २ लटजीरा २ इन की जड़ैं लेप गोमूत्र ४ क्षीर गोवर का रस १ सो तेल में पचवे औ वनौषधि के काढ़ा कैके पचवै औपसाढ़ी के औषध काढ़ा ते पीसि कै पचवे फेरि सब पचै कै सीसा में धरै नित्य लगावै तो दादखाज वहिरी मंडल कुष्ट नर है सत्य ॥ इतिमरिचाद्यतैलम् ॥ **अथ अम्लपित्त के छर्दि की चिकित्सा तस्य लक्षणम्** गरे में दाह बरै अमल चुकी आवै पित्त स्याह रक्त बमन होय तो अम्ल पित्त कहिये ॥ तस्य औषधि ॥ परवर सोंठ काढा कै पीवै तो मिटै **अन्य** चिरइता बकाइन त्रिफला परवर रूसा गुर्च पितपापरा भंगरा सब काढ़ा कै मधु डारि पीवै नीक होय **अन्य** परवरा काढ़ा कै आदी का रस डारि पीवै तो नीक होय **अन्य** रेंडी की जड़ चीत जवासा काढा कै पीवै शूल बमन जाय **अन्य** दाख खांड हरैं पीपर मधु से खाय तो दाह कै छर्दि मिटै **अन्य** विजौरा का रस २५ मिर्च ६ मिश्री १२ मिले के खाय तो अम्लपित्त मिटै **अथ विसूचिका की औषधि** तिल का तेल हाथ पांव में मरदन करै तो बिसूचिका जाय **मूत्र स्तंभ को** मूस की लेंड़ी जल सों पीसि गरम कै तातै नाभी में लेपै पेशाब खुलै **अन्य** कटैला के बीज गुरुवरू सेंधो सम लै पीसि गरम जल सों पीवै तो पेशाब खुलै **अथ अंडवृद्धि** सहरी मछरी पीसि लेपै

अंडवृद्धिमिटै अन्य कुशवारीखरीमहकै कत्थापपरी
छेउदा कीपत्ती मदारकीकली हाथी का खूंट तेलकडू मलहम्
के लगावै तो असाध्यो अंडवृद्धिमिटै ॥ सेंधो जीरा हींगसमलै
तेलमें पीसिलगावै दिन ७ तो अंडवृद्धिजाय अन्य त्रिफला
गोमूत्रसेपीसि पीवै दिन ७ तो अंड छोटा होय अथ तिमिर
कागदीनिम्बू के भीतर मिर्च भरै ७ सो माटीसे मुख बन्द करिढंढे
में गाड़ै दिन १४ बाद खोलै सोमिर्च घसिअंजनकरै दिन ७ तोतिमि
र जाय अथ आमवात कचीहरदी छीलके कच्चेरगो के दूध
४ में खोवा के खाय १ तो आमवातजाय अन्य छिउल कीसार
सेंधो गुर्च अमरबेल समलै भंगरा के रंगसों खाय तोदेह का रंगला-
ल होय अथ वंध्या करन विधि रतिसमय सुर्मा खायतुरं
तै हरदी ६ पीसि पीवै रतिसमय तो वंध्या होय ॥ हाथी की लीदसु
खाय संगभगमेंराखै तोवांझ होय अन्य तिलकातेललिंगमेंलेपरतिकरै
तोवांझ होय अन्य शिशुकेदंत आगेके लैरूपेके तवीजमेंपासराखै तो वांझ होय
कुत्ता काटने की औषधि मूसेके बिल की माटी घावमें लगावै तो विषजा
य विष खाय तो अंवरा पीसि सर्वांग लेपै फेरि जलसेन्हायगगरी १०० तो वि
षउतरै अन्य गूलाके बीजशीतलजलसेंपीवै तो विषउतरै अन्य सुहागापा
नीमें पीसिपीवै तो विषउतरै अन्य सेंधो गो घृतमिलाय खाय विषउतरै
अन्य सिरसा कसौंजी जर मोथा जलपीसि पीवै विषजाय नहरुआ की
औषधि हरिना के सींग कागदी निंबू के रसेतेघसि लगावै तो नहरुआजाय अ
थ रतौंधी समुद्रफल मधुसोंघसिअंजन करै तो रतौंधीजाय अथ झांई
मिर्च ताड़ के दूध सोंपीसिलेपै दिन तो झांईजाय अथ हुचकी
कोदौ वा मिर्च का धुंवा लेइ तो हुचकी जाय अथ दाद खाज
रक्त विकार की चिकित्सा धनिया मैनसिल गंधक अज
मोदा त्रिकटु स्याह जीरा धतूर बीज सब तोला तोला ले मैदा कै
सरसों के तेल में करि घामे धरै दिन ३ बाद लावै तो निरुज होइ
अथ गंधक सोधन गोदुग्ध ५ में गंधक टंक १० धरि हांडी

में मुखबन्दकरि आंच देइ पहर १ वा दजरै तो खुरचि लेइ हांडी तें जल में धोवै तो शुद्ध होय **हरताल शोधन** हरताल कणा करि चौरेह न जल में धोवै वार ७ तो शुद्ध होय **अन्य** हरताल चूना की कली हांडी मे भरि बीच में हरताल धरि मुखबन्द कै आंच देइ पहर १ तो शुद्ध होय **अथ मैनसिल सिद्धि:** मैनसिल टंक १० अजामूत्र में दोलायंत्र आंच पहर १ शुद्ध होय **अथ इन्द्री सिथिलो षौषधि** चमेली के पत्र का रस कर सुहागा मैनसिल पीसि तिल के तेल में पत्रवै सो लिंग के लेप करै तो इंद्री दृढ होय —

मरिचं सैंधवं कृष्णा तगरं वृहतीफलं । अपामार्गस्तिलं कुष्ठंचा माखाश्च सर्षपात्त ॥ अथ गंधा ततः वचूर्णं मधुना सहपोजयेत् । अस्य संततलेपेत मर्द्दनाच्च प्रजापते ॥ लिंगवृद्धि मथालोथः संहति भुज कर्णयोः। कर्णिकारजटा भंगा धतूरस पेषिता ॥ छाया शुष्का गुटी कार्य्या स्वमूत्रेणानुलेपयेत् । दीर्घस्थूलंचक ढिनं लिंगं तेनाभिजायते ॥ वलाश्वगंधा कुष्ठोग्नागजापिप्प लिकारजः। महिषी सर्पिषालिप्तं लिंगस्थौल्य करं परं ॥ कदली कणिकारत्वक् लोध्रमाजूफलान्वितं । कदेलामातृकाच्च द् स्फटिकं समभागिकं ॥ योनौदृढंसंकोचनं कुर्य्यात् ॥ मातृका फटिकालोध्रं धातकीवदरी समं । माजूफलमिदं चूर्णं योनिसंको चकारकम् ॥ **अथ संकोची करणं** रहदी गुरुच केसरि मोथा रक्तचंदन खांड़ वट के सुतगा टंक टंक लै पीसि उबटन करै तो वाले च **अन्य** दाख चिरौंजी सरसोंदश टंक टंक लै तेल में पासि उबटन करै तो सोभा युक्त संकोच होय **अथ गर्भ हेतु परीक्षा** चौपाई ॥ लालू रुधिर जाय त्रिय के वहै । आकुल चित्त रात्र दिन रहै ॥ पेटपीर सब अंगन दाह । जानौ गर्भ धरन की चाह ॥ **तस्य औषधि** कटु की जरि का सी बिस लेहु । दूदै टंक सहत सम देहु ॥ चार टंक शुभ खांड मिलाई । सेर गौ पय में पीजाई ॥ ऐसी भांति नाज जो करै । देवसती नर्मे गर्भ हि धरै

अत्य चौपाई ॥ सेतरुधिर नीरसो वहै। होइ मंदगति मंद न वहै॥ नाभी तरे उठै जो पीर। वादै शालस अवल शरीर॥ सीस फिरै फीकै मुखदेख। गर्भधरै चाहत सो लेख॥ **तस्य औषधि** त्रिकुट टंक १२ जल ७२ में काढ़ा चतुर्थांस कै पीवै तो गर्भ रहै **अथ गर्भ की परीक्षा** चौपाई ॥ प्रथम पसेउ लिलाटहि जागै। बहुरि खटाई अतिप्रिय लागै॥ बेसंहार क्षिन क्षिन मेहोई। रहै नहीं बल तन में सोई॥ भारी देह सदा कहलाइ। वैठत उठत कछुक थहराइ॥ बारबार उकलाई आवै। बहुत स्वाद पर चित्त चलावै कुचमुख होइ मसी करंग। रोमावली उठै सब अंग॥ इन लक्षन युत देखइ वामा। जानौ गर्भित है सुखधामा॥ वाम ओर जो कोठी भारी। तनया सांच जानौ सो नारी॥ भारी होइ दाहिनी कोख। पुत्र जान लीजे निरदोख॥ मध्य हिये भारी जो होई। जान लेहु तो बालक दोई **अथ लोम शातने** गोदंती चूना कली के ला के जल तें पीसि लेपै **तथा** चूना हरताल सिरसा के बीज सम पीसि लेपै **तथा** संख भस्म केला के नीर से लेपै दिन ३ तो लोम मरै **सत्य अथ मुख शोभा का उवटन** हरदी गुरवरू सरसों केसर मोथा सोंठ कपूर टंक टंक रक्त चंदन टंक ४ लौंग चिरौंजी टंक १० सब तेल में पीसि उवटन करै दिन ७ तो मुख की शोभा होय कुरूपता मिटै **सत्य अथ रतिरंजन कामेश्वर मोदक** असगंध मूसली केवांच मुंडी लौंग सतावरि दास चिरौंजी जायफल गरी छुहारा दालचीनी जावित्री दुइ दुइ टंक लै चूर्ण कै गोदुग्ध १० सेर लै कराह में औटै भांग की पोटरी बांधि कराही में डारै मधुर आंच देइ जब आधा दूध रहै तब भांग निकारै दूध खोवा कै खांड ७२ डारै मिलै तो चूर्ण डारि लड्डु बांधै नागीसग सोसांझ कै खाय पीछे दूध पीवै १ तो रति समर्थ दूर्त न होय **अथ महाबंगेश्वर** रस ५ कराही में कौ जौटै चंडाग्नि कै लोढ़े की करछी सघोटै पोस्ता की खोवा ७ १० मैदा कै थैसो मूही मू

मूठी देइ जरे जरे पर सिद्ध होय अनोपान सो देइ **अथ वंग का अनोपान** पान से खाय तो गर्भ होय लौंग पान से वंध्या होय हरदी का शाग लावे के घरिया के भीतर की कीट तुलसी की मंजरी पीपर ८-॥ भटी मैदा के सब खरिल करै सो खाय २ तौ कास सांस खांसी पेट शूल मंदाग्नि बवासीर ई गोला पिलही सब पेट के रोग मिटैं भूख बढ़ै ध्रुव मिदं सर्व पथ दूध भात खाय दूध कच्चे संग सीतज्वर मिटै लहसुन से व्यहवा इ जाय काकरा शृंगी का यफल से श्लेष्मा जाय मधु से पित्त जाय कंकोल से ज्वर जाय धनिया नीम खाये से पित्त श्लेष्मा जाय इन्द्रजव जल सों पीसि मिलै कफ श्ले ाजाय कुश की जर जल मे पीसि मिलै वाय गोला जाय हौंसुहागा जल में पीसि मिले खाय या लेप करै तो ववेशी जाय इंद्रजव सेंधो से ववेशी जाय कारा जीरा पीपर सोंठ मे ववेशी जाय नागर मोथा संग ववेशी जाय लौंग जाय फला संग गर्म देह अति मोथा मिर्च संग देह गर्म होय गौ के नैनू में शीतल होय देह इलाइची संग शीतल होय स्वेत दूब सतावरि अंवरा संग सब दुख जाय गंधक दूध में वंध्या जे होय ऊतर लोना निम्बू वच खुरासानी जवाइन इन चारि ऊ में मुख दुर्गंध जाय मूरी बीज ऊतर लोना संग नपुंसकता जाय माढा तेल मिलै नपुंसकता जाय चमेली बीज से नपुसक होय गंधरी को गंध पसारणि साग मिलाय चालिस दिवस ताहि सों खाय पथ दूध भात करै तो नामर्द इ पावै करेला बीज से वंध्या जे होय विखजाय पथ दूध भात करै म्यौडी की बोडी मिर्च बंग मिलै गोली करै ३० प्राति खाय १ पथ दूध भात करै गर्भ रहै बबुर के पात को ह में सुखे मैदा के ता में खाय १४ दि तो अंग वज्र सम होय पथ दूध भात सुपारी रव के संग अजीर्ण जाय बकुची के लै पात सुखाय देय कठीर ताहि सों खाय चकवर्मा खाय जो को इ मर्द मर्द गर्भिनि तिय होय ॥ दोहा ॥ अनोपान एते धरै जानि सबन को संग । रामदया कहि देत है दुइ गुंजा भरि बंग ॥ ओं श्रीश्री शिवाय स्वाहा ॥ यह मंत्र पढ़ि औषधि खाय ॥ इति बंगेश्वर विधिः ॥

सर्वरोग अथ विप्रेश्वर तांवा मारणाम तांवा टंक १०० कंट
कवेध पत्रके अग्निमें तप्त करके बुझावे गोमूत्र में ७ त्रिफला काढ़ा
में ७ निम्बूरसमें ७ मीठा तेलमें ७ गौके माठामें ७ अमिलीरसमें ७
कांजीमें ७ सिरकामें ७ फेरि हरतार टंक ४० शोरा सारगंधक टंक
३० पारा कज्जा टंक २० वच १५ सुहागा १५ सबखलि मैदा करे फेरि
गुरचूना मिलै हांडीमें ऊपर लेपै धामे सूखै तो भीतर पत्र धरै व
कनीकी पत्र में तह दै दै फेरि दिया सेवन्द करै मोहड़ा परई से बन्द
करै चूना से छापि लेइ सूखै दिन ७ चूल्हेपर आंच देइ पहर ५ पहि-
ले दीप समफेरि चंडउपर पहर २ फेरि मन्द फेरि दीप समफेरि खांड
शीतल होयू॥ इति विप्रेश्वरसिद्धिः॥ अथ विप्रेश्वर तांवा
का अनो पान लौंग इलाइची जायफर जावित्री चीत ऊट
कटाण के बीज अकरकरहा बेल तेजपात सब चूर्ण करै मैदा करै चूर्ण के सम तां-
बालै पान के रसमें गोली करै टंक प्रमाण सो पीपर संग खाय प्रात पथ्य चनाकी
रोटी खाय खारो खारो नारिच चावै तो सर्व कुष्ट जाय शीर चौरासी वायु विकार
जाय त्रिफला से खाय तो उर्द्ध कमल मिटै॥ तांवा मासा १ संभालू दल का रस
मासा ४ मिर्च टंक १ लौंग टंक १ सब चूर्ण कै खाय तो बबेशी जाय शीर यही का
खाय पहिले दिन मासा १ दूसरे दिन मासा आधा तीसरे दिन रत्ती २ खाय तो
जलंधर जाय खाण खट्टा परहेज॥ तांवा मासे २ हरैं मासे १ पीपर टंक १ अजमो
दा टंक १ सब मैदा कै मधु से चाटै तो वायु गोला जाय परहेज खारा खट्टा॥ तांवा
मासे १ छिउल के बीज टंक २ फिटकरी टंक २ मिलै खाय तो पेट के कृम मरैं करै
तांवा मासे २ पाउर मासे २ घृत टंक १ जवाइन टंक १ मधु मिलै खाय तो भवा
मिटै शीर खांसी जाय तांवा मासे २ गुर्च का सत्त टंक २ खाउर टंक ५ जवाइनि ५
मधु में खाय तो संग्रहणी शीर वातप्रमेह जाय खारा खट्टा परहेज तांवा रत्ती ६
त्रिफला मासा ३ सोंठ मासे २ सम मधु से पीवै तो दुष्ट संग्रहणी जाय खाण खट्टा
परहेज तांवा मासा आधा रूसे का रस टंक १ पिपरामूर टंक १ मधु से
खाय तो स्वास गंभीर जाय खारा खट्टा प्रहेज॥ तावा ४ खर
के फूल टंक ५ सोंठ टंक १ पीसि मधु से खाय तो रक्तपित्त जाय

खारा खट्टा परहेज पीपर संग खाय तो खांसी जाय मिश्री से खाय तो पित्त जाय तुलसी दल मिर्च सों खाय तो विषमज्वर जाय हींग से खाय दिन ७ तो वाय गोला जाय गूगुल से खाय दिन ७ तो उदर को सब रोग जाय कुमारी संग से खाय दिन ७ तो रक्तवात जाय। रुद्रवंती से खाय तो सब प्रमेह जाय गोमूत्र से पीवै तो कास स्वास जाय हरदी मधु संग खाय तो मूत्र कृच्छ जाय जवाखार से खाइ तो पथरी मिटै क्रोध मिटै इति विप्रेश्वर तांवा का मनोपान ॥ **अथ अन्य तांबा की विधि कुष्ठे** तांबा ढंकबेध पत्र के तेहि के सम पारा दूनी गंधक ले खले तुलसी के दल संग खले फेरि अंब रा के रस में फेरि मदार के पत्र के रस में फिरि लहचिचरा से फेरि का जी से फेरि जंभीरी के रस की पुट १६ फेरि सोना मारवी की पुट १ फेरि खले सो पत्र ले हांडी में धरै चूना गुर सानि के कपरौटी करै ७ सूखै दिन २ फेरि आंच देइ पहर ३२ फेरि स्वांग सीत लेइ फेरि तूजो सविष लेउ खीर भस्म के अठगुन मिर्च लेव खीर छिउल के बीज जर के रस और गूदा ले खले दिन ३ तब सिद्ध: मनोपान में खाय रत्ती १ तो कुष्ठ जाय पथ्य चना की रोटी परहेज दुष्ट बीज **अथ वृंग सेनी वटी** अफीम अकरकरहा कुचिला मिर्च सम भाग ले थिउ कुआर के रस में खले पहर वटी बांधै रत्ती प्रमाण सोखाइ तो अफरवाइ कफ खांसी कमर पीर ज्वर संग्रहणी सर्व रोग जांय लौंग हर्रे कमलगट्टा अंवरा इलाइची सम ले चूर्ण कै मधु संग खाय तो अंवरा रक्त मिटै इति शंख रक्ते॥ **अथ हरताल विधि:** तांबा की हरताल १० भेड़ी का दूध बिजौरा का रस थूहर का दूध कुमारी का रस धतूर का रंग सब में सात सात भावना दै कै फेरि कोसा में धरि के कपरौटी करै गुर चूना सानि के अच्छे फेरि सूखै छांहे नीके फेरि छिउल की खार ले हांडी में भरै बीचे संपुट धै फेरि भरि कै मुख भरि पर ढंकना बन्द कै चूना गुर से छा पि लेइ बड़ा कुंड खोदि कंडा भरि हांडी धरि बन्द कै आग देइ

निरंतर रक्षा करै पहर ८ खांग शीत होय तौ लेव ॥ अथतस्य अ
नोपानगुणम् ॥ अकरकरा से खाय तो रक्त विकार जाय मधु
से खाय तो सेत कुष्ट जाय २ सेमर के रस सें खाय तो गज कुष्ट जाय
३ तुलसी दल रस तें खाय तो खरा कुष्ट जाय ४ तीसी के तेल में खाय
तो वात पित्त जाय ५ निम्बू के रस में खाय तो दुष्ट कुष्ट जाय ६ ह
रदी वृकि मिले खाय तो कृमि जाय ७ मधु से खाय तो अंतर व्या
धि जाय ८ गो मूत्र संग खाय तो अंग पुष्ट होय ९ कांजी से खाय
तो कमलवाद जाय १० गेरू से खाय तो रक्त कुष्ट जाय ११ गोदु
ग्ध से खाय तो कुष्ट नरहै १२ गो घृत से खाय तो नामर्द पुरुषार्थ
पावै १३ करेला से खाय तो वृद्धो पितरुणा यते १४ तिल के तेल से
पीवै तो वात कुष्ट जाय १५ अदरख तें खाय तो वात पित्त जाय १६
कुटकी से खाय तो स्थंभन होय १७ गरम जल से पीवै तो देह के
हड्ड फूटन मिटै १८ शीतल जल से पीवै तो श्लेष्मा जाय १९ कु
श्म की जर सो पीसि पीवै तो तिजारी जाय २० मधु में पीवै दिन
२४ तो मंदाग्नि जाय २१ गौ के मठा में पीवै दिन १५ तो सफेद
अरु पीत प्रमेह जाय २२ पीपर छाल से पीवै दिन ७ तो रक्त पी
ती जाय तो काकोदर मिटै २५ कंकृदनि से खाय दिन ६० तो अ
जीत वर्ष जाय २५ अजा मूत्र सों पीवै तो सर्व विष को दोष मिटै
२६ गज के मूत्र में पीवै तो सकस की जाय २८ गो घृत में खाय
तो बाई जाय २९ जीरा सों खाय तो रक्त पित्त जाय ३० कद से
पीवै तो सन्निपात जाय ३१ भंगरा के रस में खाय तो पांडु रोग
जाय ३२ सेत मुसली कंद से खाय तो रस कुष्ट जाय ३३ अजा दु
ग्ध में पीवै तो पाल कुष्ट जाय ३४ विफला से खाय तो रक्त आवमि
टै ३५ सेंधो से खाय तो भूख बढै ३६ जेती औषधि कही विचार
चाउर दै सब में हरताल ॥ रोटी एक चना की भखै। खारा खट्टा
आंखि न लखै ॥ इति हरताल ॥ अथ सन्निपात चिकित्सा
कुंकुम लौंग चिरायता अकरकरा पीपर सम ले आदी के रस में

पीसि खाय तो सन्निपातजाय उन्माद कफतंद्रा वाई का सशीत
शूल भ्रम मोह ज्वर एनरहैं **अथ सन्निपातको अंजन** ॥
कूट त्रिफला हींग बच सेंधो कुठ की पिपरा सरसों सिरसा बीज सम
लै अजामूत्र सों पीसि के नेत्र में अंजन करै तो मृगी उन्माद भ्रम सन्नि
पात तिमिर एतौंधीभूत दोष सिरोवर्ति एसब मिटैं **अथ सन्नि
पात को नाश** सरसों सेंधो कूट स्वेत मरिच सम लै अजामूत्र
में पीसि नाश देइ तो तंद्रक सन्निपात जाय **अथ अतीसार
लेप** आम की गुद्दली काय फल अफीम इंद्रजव जल सों पीसि
नाभी में लेपै तो अतीसार मिटै **अथ ववेशी चिकित्सा।**
तिल माखन खाय तो रक्त ववेशी जाय **अन्य** नागकेसर मिस
री माखन खाय तो रक्त ववेशी नाय **अथ धूनी** गैड़ा की खाल
का धुआं लेइ गुदा में दिन ७ तो ववेशी जाय **अथ भगन्दर
चिकित्सा** रंती हरर अवरा जल में पीसि प्रातहि लेपन करै
तो भगन्दर जाय **अन्य** बिलारी का हाड़ त्रिफला के रस में घ
सि योनि में लेपै तो भगन्दर जाय **अन्य** चमेली पत्र सेंधो सों
ठ गिलोइ जल से पीसि योनि में लेपै तो भगन्दर मिटै **अन्य**
रसकपूर हरै मिर्च इलाइची खाय पथ्य दूध भात करै दिन ३०
तो भगन्दर जाय **अथ गुल्म रोग** अजमोदा सेंधो पीपर सों
चर हर वायभिरंग अमलोनाजवारवार हींग भूजी सब चूर्ण कै
घृत में खाय तो शूल विसूचिका ववासीर अजीर्ण जाय **अन्य**
चाऊर टंक ३ सेहुड़ के दूध में भिजै चूर्ण कै घृत संग खाय प्रातग
म जल संग तो उदरसब रोग मिटैं **अथ फीहा रोग** सरफोंका
कीजर छाछ में पीसि पीवै तो फीहा मिटै **अथ शूल रोग**
सोंठ पुष्करमूल हींग भूजि कै चूर्ण कै गरम जल में पीवै तो शू
ल अफरा गुल्म जाय **अथ छर्दि रोग** मदार के फूल लौंग स
मले पीसि गोली कै खाय प्रात तो छर्दि मिटै **अन्य** त्रिफला
सोंठ विडंग मिर्च पपरी खैर मोथा पिपरामूल लौंग देवदारु

तज लाइची पद्माख पत्रज नागकेसर सम लै दूनी मिश्री मैदा कै खाय तो छुई मिटै अथ मृगी रोग पुहकरमूल चिरायता ब्राह्मी सोंद कचूर दारुहरदी देवदारु वच मोथा पिप्पलीमूल वच खुरासानीजवाइन चूर्ण कै मधु संग खाय पीछे दूध भात खाय तो मृगी जाय अथ स्वेतकुष्ट हरताल भाग १ वकुची भाग ४ गोरोचन १ गोमूत्र सों पीसि लेपै दिन ३१ तो स्वेत कुष्ट जाय गुंजा नीम पत्र कूट वच चीत समलै कांजी से पीसि लेपै तो स्वेत कुष्ट मिटै अन्य मैनसिल चीत वच वकुची वंग कांजी से पीसि लेपै तो स्वेत कुष्ट मिटै अन्य खैर अवरा समसै काटा कै वच कै चूर्ण कै टंक २ मिलै कै पीवै तो स्वेत दाग तनके मिटैं अथ खाज हरदी अवरा वच वकुची नीम पत्र टंक २ गोमूत्र सों पीसि पीवै तो कंडू जाय अन्य गंधक चूक विडंग मिंगरफ कूट हरद पवार बीज सिंदूर समपीसि धतूर नीम पान इन के रस में लेपै तो खाज दाद विचर्चिका जाय अन्य दूब हरद समपीसि कै जल सो लेपै तो दाद खाज मिटै अथ लूता रोग चंदन कूट संभालूपात कमल सरिवन जल में पीसि लेपै तो लूता मिटै अथ नहारू रोग सीपी अधजरी कै दही में पीवै तो नहरुआ जाय अथ शस्त्र घाव काकजंघा की जड़ पीसि घाव में लगावै तो पीड़ा रक्त प्रवाह मिटै पूरै अथ वायु चिकित्सा पीपर चीत असगंध वायभिरंग जवाइन सोंठ मगरैल पीपरमूल अकरकरा समलै दूने गुड में गोली करै टंक २ प्रमाण प्रात खाय १ तो बाई चौरासी छूटै अन्य सोंठ टंक ४ मिरच टंक ४ सोहागा टंक २ बिष टंक १ आदी रस में गोली करै गुंजा सम सो खाय तो शीत मिटै वायु मिटै सत्य मिदं अथ तैलम् वायु रोग मीठा तेल १ धतूर का रस १ धतूर बीज टंक ५ बिष टंक ५ गुंजा टंक ५ सब यत्न से तेल में पचावै तो सिद्ध होय लघु विष गर्भ तेल जो लावै तो चौरासी वायु जाय ॥ इति लघु

विष गर्भ तैलम् ॥ अन्य हलसून कूटि के गो दुग्ध में खो वा के खाय तो वात शीत हड़फूटन देह की जकड़न मिटै अथ गंडमाला माल कंगनी रासन देवदारू अगर गंध गिलाइ सोंठ कचूर सोंठ सतावरि जवाइन नींब भंगरा केस से सम औषधि लै पीसे सब की तुल्य गूगुल ले अर्ध भाग घिउ ले गोली करै टंक २ गरम जल मद दूध इनके संग खाय तो सर्व संधि गत वायु गंडमाला मिटै अथ पित्त दाह इलाइची कचूर खस अगर चंदन सम लै जल सों पीसि पीवै तो पित्त दाह मिटै अन्य घृत धोवै १०० सो लेपै पांव में तो शीतल होय अथ दंत रोग कीट रक्त स्राव पीडा यां रूसा मोथा खैर दूधिया कूट की लोध मजीट सम लै पीसि खाय तो दंत कीट रक्त स्राव पीडा मिटै चिकनी सुपारी बदाम का छिकला का कीड़ा बबूर का गोंद रूमी मस्तगी माजूफल थोरा भूजि के मैदा के मंजन करै गोदंत वत होय अथ मुख पाक की औषधि त्रिफला दारू गिलोइ चमेली पत्र दारू हरदी यादी सम लै पीसि के गरम के मुख मे लेपै तो मुख की पीड़ा मिटै अन्य सरसों सेंधो लोध वच सम लै पीसि जल मै मुख में लेपै मुख की किलास मिटै अथ झाईं की औषधि छीला तिल जीरा सरसों पिपरा सम ले जल सों पीसि मुख में लेपै तो झाईं मिटै अन्य सेंधो हरद कूठ लोध सौंफ सम ले मैदा कर के पत्र के रस ते पीसि लेपै तो झाईं मिटै अथ नासा रोग दूब के फूल हरीतकी अनार के फूल सब पीसि रंग निचोय नास लेइ तो नासा की रक्त स्राव मिटै अन्य पीनस सोंठ मिर्च पीपर गुड़ में सेवन करै तो नासा के सर्व रोग जांय अन्य मिर्च २ बदाम के बीज २ पानी में पीसि नास लेइ तो पीनस मिटै अथ नेत्र रोग सींगी मछरी का सिर जराय के राख लेइ लोग फटकरी गोघृत से अंजन करै लगावै तो बम्हनी मिटै अथ नेत्र अंजन रसवत

सेंधा हर्रे गेरू हरद जल से पीसि ऊपर लेपै नयन पीर मिटै
अन्य फिटकरी भूजी रसवत नारी का दूध कांस की थाली पर
अंजन करै सो नेत्र में लगावै अंजन तो पीड़ा मिटै **अन्य अं-**
जन तिमिर को सुरमा सेंधो सख मैनसिल त्रिकुट का
यफर मिश्री जल से अंजन कै लगावै तो तिमिर फूली माड़ा मि
टै **अथ कर्णरोग** देवदारू वच सोंठ सेंधो सौंफ इलाइ-
ची सब अजा मूत्र सों पीसि गरम कै कान में डारै तो पीड़ा मिटै
अन्य सेंधो अजा मूत्र में गरम कै कान में डारै तो शूल कर्ण
शब्द गूजी मिटै **अथ शिरोरोग** देवदारू कूट कायफर रेंडी
का तेल कांजी से लेपै तो शिर की पीड़ जाय **अन्य** रेड़ जर रास
न कूट छोटी वच मोथा जल से पीसि गरम कै लेपै तो शिर विथा
मिटै **अन्य** चंदन हर्रे कसेरू दूब उसीर अंवरा कमल बीज
हौबेर जल में पीसि लेपै तो पित शिर मूल मिटै **अन्य** कूट
मिर्च कायफर रेंडी की जर जल से पीसि गरम कै लेपै तो सूर्य्या
वर्त मिटै **अथ अर्द्ध कपारी की औषधि** कूट पीपर
धनिया बच जेठी मधु कांजी ते पीसि लेपै तो आधा सीसी मिटै
अन्य सेंधो घृत सों पीसि कै प्रातै नास लेइ तो आधा सीसी मिटै
अथ अतीसार मिर्च सूसी मस्तगी दाडिम कली बंसलोच
न आम की गुठली लोध मुलेठी धवई के फूल माजूफर सोंचर
कूट जायफल कुंजी के फूल ये समलेइ कथा २ भाग पिठवन इं-
द्रजव मोचरस भाग ४ पीसि पोस्ता जल सों गोली करै टंक १ सो
तंदुल जल सों पीवै पथ्य माठा भात खाय अतीसार मिटै स-
त्य मिद ॥ इति लीलावती वटी ॥ **अथ पाचनम्** विरि-
या लोन चूक जवाइन जीरा दूनो हर्रे त्रिकुट चीत हींग भूजी
अवरा अजमोदा वायभिरंग धनिया अमिली सम भाग लै
मेदा कै अमिल वेत के रस में भावना दे ३० फेरी खाय तो मंदा-
ग्नि व्यथा मिटै भूख अबल बढ़ै **अथ कर्णरोग** समंदर फेन

कूट परवर हींग ताम्बूल घोंघा का मांस सोंठ छोटे बेल की गू-
दी वच लहसुन सब लै कर तेल में पर्चवसो कानमें डारै चहला होय कृ
मि परे होंय सो सब दुख मिटै अपथ कुष्ठ कुठार: विषटंक ५
पारटंक ५ गंधकटंक ५ हरतारटंक ५ भेलावांटंक ५ भंगरा
टंक ५ अमिली की चिपरी कोखारटंक ५ सबलै खरिल करै
पहर १ फेरि रूप सर्प के पेट में फारि के भरै सो सर्प लै हांडी में
भरै फेरि गोदुग्ध भरि मुख बन्द करै वज्र सम लेपै फेरि चूल्हे पर
धरि आंच देइ पहर ८ प्रथम दीपाग्नि फेरि यथाक्रम बढावै अ-
ग्नि पहर ८ पर्य्यंत फेरि सांग शीत लेइ सो सब खाय पान में र-
त्ती १ तो अठारह कुष्ठ मिटै ध्रुव मिटम अपथ मुख दंत रोग
माजूफल सोना माखी लोहचून खैर मैदा के मधु संग दंत मंज
नकरै तो रक्त स्राव दंत विथा मिटै अपथ वस्त्र शुद्धि: घृत
का दाग कांजी से मिटै तेल का दूध से मसि का दही से पान का
गुड़ से खैर का दाग कैथा के धोये से मिटै अपथ वंध्या प्रयो-
ग: व्यास ऋषि सों यक्षिनी प्रश्न किया कि भो स्वामिन् स्त्रिन
के गर्भ नाहीं रहत है सो काभै है ऋषि बोले कि स्त्रिन के सात
दोष होत हैं ताते गर्भ नहीं रहता यक्षिनी बोली कि भो स्वामि-
न वे सात दोष कौन हैं जिन ते नारी वंध्या होती है व्यास बोले
कि प्रथम दोष तो छोटी स्त्री को बड़ा पुरुष भोग करै तो फूल
जरि जाता है गर्भ नाहीं रहता १ फेरि स्त्री के फूल में पवन पैठी
होय तो गर्भ न रहै २ फेरि स्त्री के फूल में मांस वृद्धि होय तो गर्भ
न रहै ३ फेरि स्त्री के फूल में अग्नि परी होय तो गर्भ न रहै ४
जो स्त्री के फूल में शीतला होय तो गर्भ न रहै ५ स्त्री के फूल में
छाया होय तो गर्भ न रहै ६ जो स्त्री के फूल में कीट वैठा होय
तो गर्भ न रहै ७ जो स्त्री के फूल में भूत चुरैल होय तो गर्भ न रहै
८ फेरि यक्षिनी बोली हे स्वामिन् ये दोष कैसे मिटैं व्यास बोले
स्त्री रजस्वला होय तो स्नान के दिन भोग करै भोग उपरांत पूछै

स्त्री तेकि हे प्रिये तुम्हारा कौन अंग दुखता है जो कहै कि माथा दुखता है तो जानै कि फूल जरिवा है १ ताकी औषधि ॥ समुद्र फल सेंधो लहसुन ये तीनौ समलै पीसि फाहा बनाय गा भे में राखै दिन ३ चौथे दिन स्नान करै पुरुष भोग ते गर्भ रहै जो कहै अंग कौंपता है तो जानै कि फूल में पवन भरा है ॥ ता की औषधि ॥ हींग टंक १ तिल के तेल सों मिलै के रुई का फा हा बनाय भग में राखै दिन ३ चौथे दिन स्नान करै पुरुष संभो गते गर्भ रहै ३ जो कहै कि कमर दुखती है तो जानै कि फूल में मांस बढी है ॥ ताकी औषधि ॥ स्याम जीरा हाथी का न खरेंडी का तेल मिलै पीसि सौ रुई में कै भग में राखै दिन ३ चौ थे दिन स्नान करै पुरुष संयोग ते गर्भ रहै ४ जो कहै कि सब स रीर दुखै है तो जानै कि फूल में अग्नि परी है ॥ ताकी औषधि ॥ सेवती के फूल का रस तिल के तेल में मिलै रुई में बोरि भग में राखै दिन ३ चौथे दिन स्नान करै पुरुष संयोग ते गर्भ रहै ५ जो कहै कि पिंडुरी दुखत है तो जानिये कि फूल में कीडा लगा है ॥ ताकी औषधि ॥ हरी बहेरा का यफल राई पीसि वटी कै सब साबुन के पानी से फाहा कै बरी लपेट भग में राखै दिन ३ चौथे दिन स्नान करै पुरुष संयोग ते गर्भ रहै ६ जो पेट दुखता है तो जानै कि फूल में शीतल लाई परी है ॥ ताकी औषधि ॥ वच जीरा असगंध तीनौ सुहागा के पानी से पीसि के फाहा कै भग में राखै दिन ३ चौथे दिन स्नान करै पुरुष संयोग ते गर्भ रहै ७ जो पेडू दुखता होय तो जानै कि फूल में जल अडगया है ॥ ताकी औषधि ॥ कस्तूरी मासे १ केसर मासे १ ता की गोली बनावै ४ भग में राखै दिन ३ चौथे दिन स्नान करै पु रुष संयोग से गर्भ रहै ८ जो आंख दुखती होय तो जानै कि फूल में जाला छाया है ताकी औषधि ॥ अंबरा बहेरा मधु से गोली कै भग में राखै दिन ३ चौथे स्नान कै पुरुष संयोग

तेगर्भ रहै ई जो कछुन पीड़ा करै तो जानै कि भूतदोख है ता की औषधि नहीं है जंत्रमंत्र देव पूजन प्रसिद्ध है अथ परीक्षा स्त्रीपुरुष के मूत्र में चना जमावै जा के मूत्र में चना जामै नहीं ता को वंध्या कहिये ॥ इति वंध्या विधि समाप्तः ॥ अथ पुष्ट बीर्य की औषधि बबूर का गोंद ३ वा के दूध में भिजरावै दिन २ तब घृत के बुकनी करै और सरसी की बुकनी ३ ई सब गोंद की भेटा ३ कलमी तज की भेटा ३ चीनी १ सब मिलै के गो दुग्ध संग चूर्ण २५ पीवै तो छिन मिटै पुष्ट होय अन्य गोंहू का सत्त गुर्च का सत्त बबूर का गोंद खांड घिउ १ गरी चिरौंजी खदाम छुहारा २ मिर्च २ पाग कै खाय १ धातु बंध होय वृद्धि होय अन्य स्याह मूसली का तेल निकाल कर बंगला पान में १ र नौ खाय नो बल पुष्ट होय अन्य गेहूं की मैदा स्वेत मूसली मैदा कै घी में मिलै मधु में तर करै घृत पात्र में धरै रात्री में खाय १२ तो पुष्ट होय नासूर की औषधि चंसुर भेड़ी के घी में खरिल करै पहर १ सो फाहा देइ नीका होय अथ अंजन मुरदासंख २५ नीम की पत्ती के रस में हांडी में चूल्हे पर धरि के आंच देइ सोधै फेरि जब रस जरै तब लैकै कंडा में भस्म करै संपुट कै सो भस्म कै अंजन करै सो नेत्र में देइ तो गरमी की विथा तिमिर जरनि नेत्र की मिटै ॥ दोहा ॥ विश्वा पुष्पवती तिया कुलटा संगे भोग । उच्छिष्ट संग पे सावद्दू होत फिरंगी रोग ॥ अथ फिरंगी वाव की औषधि कुटकी ६ पित पापरा ६ चिरायता १२ सफद चंदन ६ सब चूर्ण कै भिजै राखै प्रातै मलि पीवै दिन ४० तो अच्छा होय अथ पुष्ट ई सालिम १ गुरबरू २५ गुरबुल छोटा २५ कलमी तज गोंद बबूर का १ मूसली स्वेत ४ चुनिया गोंद १ धौ का गोंद रूमी मस्तगी १ अतगंध नागौरी २ तालमखाना २ सब चूर्ण कै दूनी चीनी डारि खाय १२ दूध संग पीवै तो पुष्ट बहुत होय ॥ अथ बालक के ज्वर होय पेट फूलै पीरा करै ता की औषधि बर्ष ते ऊपर सात बर्ष लौं होय तो अमिल नास ३

मरोफली ३ सौंफ ३ हर्रे के बीज ३ इंद्रजव ३ मुरदासंख रत्ती १ काढ़ा करै सो रहके शा २५ जल में जव २५ ये सामर रहे तब पियावै आराम होय अन्य बालक वर्ष ७ ते दश तक होय ता की दूवा ज्वर होय का पर लगी रहे हरे रत्ती १ मुरदासंख रत्ती १ अदरक गूदी रत्ती १ सोंचर रत्ती १ लौंग रत्ती १ मिर्च रत्ती १ इलाइची रत्ती १ सम पीसि के पुरानि अमेवल का बनाय के देइ तो अच्छा होय अथ पित्तज्वर की औषधि बंस लोचन ६ इलाइची गुजराती ६ हर्रे ६ जेठी मधु ६ सौंफ ६ पुदीना ६ मिसरी ६ सब जल में पीसि पीवै अच्छा होय अथ वात कफ ते पेट पीरा करै ता की औषधि । लौन ५ त्रिफला त्रिकुट बच हरी कुट की देवदारू अजमोदा लौंग जीरा २ चौकिया सुहागा वायभिरंग हैसि की जड़ सम भाग लै चूर्ण के तिह की दूनी सेंहुड़ की भस्म मिलै खायं ६ ऊपर ते गरम जल पीवै पेट पीर मिटै अथ वात से गांठी दूखै पुराना दिया अग्नि में तप्त कै थाली में धै औषधि पीसि के दिया में डारै सो वलका की होय कमर दूखै और फोला भरा होय ता की औषधि सोंठ ६ लहसुन ६ ववई के पंचांग ६ मोथा ६ सब काढ़ा अष्टावशेष पीवै तो अच्छा होय अथ तेल में फोला भरै तेल गरी का ५ अफीम टंक १ मिर्च २ बैतरा २ पीपर २ अकरकरा २ सब चूर्ण के तेल में पचावै सो तेल अंग में लगावै तो फोला बाई जाय अथ कफ हर्रे ६ मोथा ६ बेरी के पत्र ६ बैसा रही हरी ६ पिपरामूल ६ भटकटैया की जड़ ६ अष्टावशेष काढ़ा के पीवै तो कफ जाय अष्टपुष्टका सर्द चूर्ण धातु वृद्धि को अवश पुराना आम की गुठली पुरानी कमल गट्टा ५ गुर्च का सत्त २ बरियारी की जड़ १ तालमखाना १ तेज कलमी २ बबुर का गोंद १ तीखुर १ असगंध १ मूसली दूनी २ रूमी मस्तगी १ बैतरा १

केवांच के बीज १ सब चूर्ण कै दूनी चीनी डारि खाय १२ ऊपर ते
दूध पीवै तो अतिपुष्ट होय **अथ पेट करैता के बंद करने**
का काथ बेल की गूदी ६ धनिया ६ मोथा ६ सुगंधवाला ६
गुर्च ६ सौंफ ६ काढ़ा अष्टावशेष करि पीवै तो दस्त बन्द होंय
अथ इन्द्रीजुल्लाव रेवन्दचीनी ६ कलमीशोरा ६ अफ़ीम
पुराना ६ जीरा ६ जेठीमधु ६ सब मैदा कै खाय ऊपर दूध पीवै
दूध ७ पानी २ मिलै चूर्ण खाये जाय दूध पिये जाय **अथ जूड़ी**
अंतरा तिजारी की औषधि पखर के पत्र ६ इन्द्रजव ६
देवदारू ६ त्रिफला १८ मोथा ६ अमिलतास ६ जेठी मधु ६
गुर्च ६ रूसे के पत्ता ६ सब काढ़ा अष्टावशेष कै पीवै अच्छा हो
य **अथ जूड़ी की औषधि** भटकटैया की जड़ १२ धनिया
१२ बेतरा १२ देवदारु १२ अष्टावशेष कै पीवै जूड़ी जाय **अ**
थ सब बातेकनक गर्भा सोंद बटी धतूरके फल ६
बैतरा सोंठ ४ जवाइन ४ बस्त्र में पोटरी कै घड़ा में फल भरै तब
सोंठ धरै फेरि जवाइन धरै फेरि फल धरि जल भरि मुख मूंद
कै चुरवै पहर दुइ फेरि उतारि के सोंठ लैले और फेंकदे सो
बैतरा छांहे सुखवै तब सहिजन के रस में गोली बांधै चनास
म सो खायनीक होय ध्रुवमिदम् **अथ कास खासादौ**
रूसे के पत्ता की खार भटकटैया के पचांग की खार लहचिचरा
की खार तमाखू के डंडल की खार ये सब लै एक घड़ा पानी में
चुरावै बेर कुसुभ की तरह कराही में डारि खौवा करै जब रस
की तुल्य होय सो चाउर भरि बंगला पान में खाय तो खांसी
दमा नीक होय **अथ घोड़ा पाक** घीइड़ी छेरी का दूध १ में
भिजोवै तब मिर्च २५ इलाइची गुजराती २५ लौंग २५ जाय
फर २५ पीपर २५ सालिम २५ बंसलोचन २५ रूमीमस्त
गी २५ कमरजीर २५ असगंध २५ तालमखाना २५ बीज
बन्द २५ सतावर २५ तेजकलमी २५ मूसली बेत २५ सोंचल

२५ चुनिया गोंद २५ बबुरकागोंद २५ मैदा २५ नागकेसर २५ मलै चंदन २५ स्याहजीरा २५ बरामः छुहारा ७ चिरौं जी ७ गरी ७ - कपूर ३ समके दूनी सीनी घृत ७ पाक कै खाय पाव पैसा भर तौ अति पुष्ट होय **अथ प्रसूत रोग** धतूरे के फल की पीठी ७॥ अदरक की पीठी ७। तेल तिल ७ तेहि मों पचावै सो तेल लगावै प्रसूत मिटै घृत हेम सुरतौ दशमूल का काढ़ा पीवै प्रसूत मिटै **अथ शूल** हींग सेंधो गोमूत्र में पीसि तिल के तेल में पचावे सो नाभी में लेपै सूल मिटै **अथ पक्षी पकड़ने की बिधि** मुख सब आटा में सानि के खवादै बबर होय तब पकड़ लेइ **अथ मिरगी की चिकित्सा** ममो का क़िरवा बटोरि के लिलावै तौ नीकु होय **अन्य** जेहि जेवरी से चोर बांधा गांगा जाय सो जेवरी लै हांडी में भरि मुंह बन्द के कपरौटी करि फूंकै सो भस्म जल में पिआवै अच्छा होय **अथ बीछी मारने की दवा** मुहर घसि के लगावै तो बीछी उतरै **अथ लड़का होने में बिलंब होय पीड़ा करै ता की औषधि** ब्राह्मी पीसि हाथ पांव में लेप करै तौ प्रसौ होउ जो लरिका मुवा होय **अन्य** पाटी चिरिन्हा पीसि नाभी में लेपै औरु जलदी छोड़ाय लेइ तो जलदी लड़का होय **अन्य** बरियारी की जड़ खोदै उत्तर मुख होय के सोलावै पीसि नाभी में लेपै माथे बांधै जलदी प्रसव होय **अथ वमन बिधि** बच १ कंकचा २ सेंधो १ कंक १ मधु सों घोरि खाय वमन होय **अन्य** मैनफल दूध में औटै जमावै मथि नैनू काढ़ि खाय तो वमन होय **अथ शस्त्र निवारण विधि** सरफोंका की जड़ उत्तर मुख होय के लावै लेइ फेरि उत्तर मुख मुह में एखि सस्त्र में जाय जब लौ बोलै तब लौं घावन लागै **अथ मुन्नर का गुण** मधु सों खाय तो स्त्री प्रदर मिटै जंभीरी के रस में खाय तो निजारी जाय मधु में पीसि लगावे तो दाद जाय **अथ बिष करै की औषधि** हुरहुर के बीज पीसि पीवै तो

माहुर फरै अन्य फटकरी पीसि पीवै तो बिष मिटै स्थावर जं
गम दोनो सत्य अथ घुमनी त्रिकुट मूगी गो घृत मे भूजि गु
ड़ में गोली बांधे सो खाय दिन ७ घुमनी मिटै अथ अतरा
जूड़ी की औषधि चिबिबिल की पाती औटाय सांभर सेधा
य तो अतरा न रहै अथ सिड़ी कुत्ता काटे कूट टंक ४ अश्व
गंध काढ़ा के पियावै तो नीक होय अथ गोजर बिषा भ
टार के पत्र गरम कै बांधै नीक होय अथ बीछी लहसुन
मदार के दूध में घसि लगावै नीक होय अथ कखरी गं
ध की औषधि फटकरी मदार सरव पीसि लगावै गंध मिटै
अथ पुष्ट की औषधि हरै अवरा सोंद जेठी मधु परास के
बीज घृत मधु सानि खाय तो नपुंसक पुरुषार्थ पावै अथ पथ
री की औषधि कंजा की गूदी मधु दूध से पीवै दिन ७ पथरी मि
टै अथ पारा मारण बिधि पारा दुरदुर के रस में खरिल
करै फेरि सपुट दै गजपुट जांच देइ पारा मरै अथ सोना
मारवी गुण जो खाय मास १ सोना मारवी तो युवा सम
सदा रहै जो चालीस दिन खाय तो अंग कस्तूरी सम सुगंध
होय अथ केश वृद्धि अवरा नेवु के रस में पीसि लगावै तो
बाल बढ़ै अथ मुख सुगंध की औषधि तज इलाइ
ची नष जावत्री नागकेसरि जल सों पीसि बरी बांधे रत्ती १ पा
न में खाय दिन ७ तो मुख सुगंध होय अथ मूड़ पीड़ा की
सोंठ गुड़ मिले संघत रहै नीक होय अथ प्रदर रोग सुगंध
बाला नागकेसरि तवाखीर धेलाधेला भरि लै चौरेहन से पी
सि पीवै प्रदर मिटै अथ फिरंग बात की औषधि फटकरी
सुहागा १२ नूतिया ईंह ईंगुर १६ कौड़ी २ जारि के कागदी के
रस नेंगोली करै मटर सम मो प्रात खाय गोली १ अरा महोय
अथ हैजा की औषधि हरै २५ अमिलबेत २५ सोंफ २५
जीरा २५ पुदीना २५ मोचरस २५ मिर्च २५ सम ले चूर्ण खाय ४

जामुन की पाती घसिके श्रोही रस में पीवै तो हुलकामिटै
श्रन्य सोराहुवाना २५ श्रफीम ६ मिलै के गोली करै ४ सो
एक गोली देइ श्रौर जब पियास लगै तो चिउनापुराना भिजै
कै मिलै पानी पियावै जो गिर परै तोफिर देइ नीक होय ॥
श्रथ हुचकी की सिद्धि श्रौषधि कस्तूरी रत्ती १ जावि
त्री मासे ६ गुजरातीइलाइची के बीज ६ पीपर ६ मधु से पीसै
गोली रत्ती समजल सों बांधै १ गोली खाय तो कैसिउ हुचकी
होय सो बन्द होय श्रथ हुतासन रस सर्वज्वरे विषमा-
से ४ बैनरा २५ सोहागा २५ मिर्च मासे ८ कौडी का चूना २५ स
व लैखरिल करै पहर १ सो खाय पानमें रत्ती ९ तो शीतज्वर
विषम मिटै श्रथ त्रिपुरभैरव रस: विष मासे १ सोंठ मा-
से २ पीपर मासे ३ मिर्चे मासे ४ तांबा की भस्म मासे ५ सिंग
रफ की भस्म मासे ६ सब खरिल करै पहर १ खाय रत्ती १ पा-
न में तो वात श्लेष्मज्वर जंघा पार्श्व शूल पीनस स्वास बधिर
ज्वर सब मिटै सत्य मिदम् श्रथ लडका होने मे देर
होय दुख होय ता की श्रौषधि चिचडा की जड़ पी-
सि के पोटरी बांधे तो जलदी होय श्रन्य बरियारी की जड़
जब न उतरै होय सो लै पीसि बोड़ी लावै तो जलदी ल-
ड़का होय श्रथ नपुसक की श्रौषधि हर्रे श्रवरा सो
ढ जेठी मधु पलास बीज सब ६ मरी रमरी भर लै चूर्ण कै मधु
घृत सानि कै खाय दिन ३१ तो नपुंसक पुरुषार्थ पावै श्र-
थ छई गिरावै की श्रौषधि लहसुन २५ राई २५ श्रंको
ल के जड़ की छाल २५ भंगरा की राख २५ सब के सम गुड़ पुरा
नामिलैं के गोली बांधै ३ खाय गोली १ ऊपर ते छेरी का दूध
पीवै तो छई गिर पड़ै तो धर्म करै श्रच्छा होय श्रथ शीला
कदि शूल गाठ पीड़ा का काढ़ा सोंठ ६ लहसुन ६
बबई की जड़ ६ श्रौ पत्र ६ नागरमोथा ६ श्रष्टावशेष काढ़ा

कैपीवै तो अच्छा होय अथ फोड़ा की औषधि लीलाथोथा साजीखार जवाखार सुहागा समपीसि पाके ठौर पर लगावै तब मोम की टिकिया करि गरम कै बांधि देइ तथा संख कौड़ी का चूना गुड़ घोरि के लेप करै तवकड़ू तेल लगाय के सेंदुर बुरकाय देइ तो पका हुआ अच्छा होय अथ बवासीर औषधि बंदाल पंचागभांग तिर्तऊ तरोइ बबुरका को॰ इन हांडी में भरि के आगदै औषधि का चूर्ण डारि डारि धूनी लेइ कपड़ा ओढ़ के दिन ७ पथ्य दही भात खाय चूर्ण को गोंद के जल से गीला करि बेरी प्रमाण खाय प्रात १ मध्यान्ह १ सांझ कै पथ्य दही भात करै दिन ही तो गुदा के कृमि गिरैं बवासीर जरा म होय अथ मृगी की औषधि केरी के दूध की नास लेइ दिन ७ नीक होय अन्य गोदुग्ध ऊंट के मद मिलै के नास लेय दिन ७ नीक होय अथ कफ ते खांसी आवै ताकी औषधि पुहकरमूल भटकटैया की जड़ त्रिकटु त्रिफला भारंगी काकड़ासिंगी जटामासी लोन पांचौ समभाग लै मैदा कै खाय ऊपर तेगरम जल पीवै खांसी मिटै अथ अन्न न पचै तो जवाखार सोंठ समलै चूर्ण कै घृत मे चाटै २ भूख लागै अथ सिंगरफ सोधन विधि सिंगरफ केला के पानी से खरिल करै पहर १ टिकरी बांधै गजपुट आंच देइ सिद्ध होय अन्य जामुन के फूल के रस में भिगोवै कराही में धरि आंच देइ जब भस्म सम होय सुद्ध होय अथाभ्रक शुद्धिः कृष्णाभ्रक लै अग्नि में तप्त कै बुझावै चाउर का कन जल में घोरि के तामें वा क्षीर में फिर चूर्ण कै त्रिफला के काढ़ा में खरिल करै पहर १ टिकरी सुखवै तब गजपुट आंच देइ स्वांग शीतल ले नकछिकनी के रस में खरिल करै पहर १ फेरि गजपुट देइ फेरि अर्क दुग्ध में मद्य सुखै के टिकरी अर्क पत्र में टिकरी लपेटि के पुट ७ वट जरा काथ ते मध्य पुट १ फरि भस्म सम घृत लै कराही में चढ़ाय आंच देइ जब घृत

जरै तब भस्म सब योग्य है ॥अथ चूर्ण सर्व रोगे रेवन्तची नी टंक ५ सोना माखी टंक ५ जटा मासी टंक २ खेत चंदन टंक २ देवदारु टंक २ दारु हरदी टंक २ रक्त चंदन टंक २ सोंठ टंक २ मिर्च टंक २ पीपर टंक २ त्रिफला टंक २ सौंफ टंक २ जीरा टंक २ धनियां टंक २ बाबभिरंग टंक २ खुरासानी जवाइन टंक २ वच टंक १ तज टंक १ पत्रज टंक २ लौंग टंक २ दालचीनी टंक २ स्याहजीरा टंक २ गुजराती इलाइची टंक २ मिश्री ॥ सब चूर्ण कै खाय मासे ५ सायं प्रात तो मलदोष वात पित्त कफ कृतदोष कास स्वास छानी पीर पेट शूल प्रमेह मूत्र रुच्छ सोजा कबिन्द कुशाद हाथ पांव की जरन हड्फूटन गुल्म हौलदिल भ्रम वायु हुचकी ये सर्व रोग नाशै भूख बढै ॥अग्नि खुलै ॥ इति सर्वो गसुन्दर चूर्ण ॥अथ योनि शूल निम्बू के बीज की गूदी रेंडी की गूदी नीम के गाभा के रस में गोली कै भग में रंगवै योनि की शूल मिटै ॥अथ ॥अनंग वर्द्धन रस: जायफल १ अफीम २½ गाय के घृत में खरिल करै घडी १ बाद बडी कै गौरवा चिरईपकरि कै पछदों पग उदर मलदूरि कै टिकरी पेट में भरि डोरा से बन्द करै सो मुरकी में धरि बन्द कै गजपुट आंच देइ जब खांगसी तहोय तब लेइ रत्ती २ बंगला पान में दिन २१ प्रात सांझ को दूध पीवै ऽ॥ स्त्री बादी खटाई तेल से परहेज करै दिन २१ तो रति समय स्त्री भोग तें नदग्न होय ॥अन्य सिंघोडा की जड़ रवाद के छाया में सुखै गटी कै पातालयंत्र से तेल निकासै सो सीसी में धरै खाय बुंद २ बंगला पान में दिन ३१ तो नपुंसक मर्द ई पावै ॥और मर्द खाय तो काम भोग में दग्न न होय संयम ॥अनंग वर्द्धन के सब तथा गुणाम ॥अथ रस प्रकार: ताब की हरताल तोला १ कु आतुलसी के रस में खरिल करै पहर १२ गोली बांधै मासे २ छाया में सुखावै फेरि पियाज ला ल में कोलि कै भरै गोली मुख बन्द कै कै कपरौटी करै पुट ३ छाया में सुखावै फिर पीपर की बैली लै पक्का ½ सेर गजपुट

आंचदेइ तब सिद्धहोय रत्ती तोला प्रमाण खाय को चाउर प्रमा
ण अन्य तावकी हरताल तोला २ उतरन के दूधमें भिजवे फेर पी
पर की छाल लै कोइला करै आधसेर ॥ उत्तरन के रसमें सा
नै घरिया बनावै २ तिहमें हरताल धरै दूसरी घरिया मे वन्द कै ए
क छोटी मलिया में धरि मुख वन्द करि कपरौटी करै यामे सुख
वै फेर बिनवा कंडा पक्का ३ गजपुट आंचदेइ सिद्धहोय सो खा
य चाउर भर पानमें तो बल होय रोग जाय अन्य हरताल तोला
२ घिउकुआर के रसमें खरिल करै पहर १ टिकिया के संपुट में धरि
फूकै सिद्धहोय खाय चाउर भरि बलपुष्ट कै रोग हरै अथ पा
राकी विधि पारा तोला १ लैमनवांकपास के फूल के रसमें ख
रिल करै वही के सोंदासे पहर १२ छोटगोली बांधि छाही में सुखावै फे
रि सवैटपियाज कोल कै भरै मुखवन्द कै कपरौटी कै सुखावै फेरि
एक हांडी में वारू भरिके भीतर पारा धरै मुखवन्द करै हांडी का
गजपुट आंचदेइ कंडा पक्का ३ सेर तरे देइ ऊपर ३ सेर देइ बीच
में हांडी धै आंचदेइ सिद्ध होय खाय चाउर भरि अन्य तांवेकी
कटोरी तोला १ की बनवावै तिहमें पारा धरै तोला १ ऊपर काग
दी निम्बू का रस डारि देइ भरिके डारत जाय जब ताई कटोरी पा
रा का पी न लेइ जब पारा कटोरी में मिलै तो मट्टी के कासा २ मेथ
रि वन्द कै घोड़े की लीद में गाड़ै दिन २१ फेरि निम्बू कोरै एक ईट
में गड़वा कै पारा धरै और आंचदेइ धीरे और पारा के ऊपर तिलके
तेल का पुनारा देत जाय आंच पहर ४ तब सिद्ध होय खाय चाउर भ
रि पानमें अन्य पुराने निम्बू की जड़ खोदि कै पहिले उसमें केला
की खार भरै २५ फेरि पारा धरै तोला ५ फेरि खार धरै २५ फेरि बंद
करै काष्ठसे मट्टी से गाड़ा राखै मास दै बाद निकासै पारा सिद्ध होय
सो खाय चाउर प्रमाण पानमें अथ तांबा गलने की बिधि
निसोदर के दावन से गलै गोभी के रस से गलै अथ रूपरस बि
धि चांदी तोला २ सोनामाखी मासा ४ कुकरौंधा से खरिल करि

चांदी पर लेपै फेरि धमरा कारस लेपै ऊपर तो गजपुट देइ आं-
च पहर १ तो रूपरस होय सो खाय चाउर प्रमाण सब रोग जाइ
अन्य मुंमुनी कारस तोला २ पारा तोला १ खरिल करै पहर १ फे
रि संपुट में धरि कपरौटी करै ५ गजपुट आंच देइ पहर १ पारा सि
द्ध होय अथ संखिया की विधि बथुवा के रस में संखिया
भिगोवै दिन २ फेरि बथुवा की लुबदी में धरि कपरौटी करै ५ फेरि
हांडी में बालू भरै बीच संखिया धरि के मोंहड़ा बन्द करै आंच देइ
पहर ३ तो भस्म होय सो खाय चाउर भरि अन्य बनदूधी रस में
भिगोवै दिन १ बालुका यंत्र से सिद्ध होय सो खाय चाउर भरि
इति संखिया की बिधि ॥ अथ लोह मारन बिधि : लो-
हा कांती सार ३ २ अग्नि में तप्त कै बुझावै तेल में ७ गौ के माढा
में ७ गो मूत्र में ७ कुरथी के पानी में ७ फेरि लोह चुन कै कै बल्ले व
ट्टा मगावै सो रस काढ़ि के भावना देइ तो आंच देइ पहर ४ यही
बिधि करै ३ फेरि घिउकुआर के रस में भावना दै खरिल करै आं-
च देइ पहर ४ यही तरह करै आंच ७ फेर मदार के दूध की भा-
वना दै खरिल करै फेरि टिकरी बनाय बनाय मदार के पाता पर
धरै आंच देइ पहर ४ यही बिधि ७ फेरि मदार के सोर के रस में
खरिल करै बरी बनाय मुरै कोशा के संपुट में धरि आंच देइ यही
बिधि ७ फेरि सेमर के मूसला के रस में खरिल करै आंच देइ ३
फेरि अकासबबरि के रस में खरिल करि आंच देइ ३ फेरि बंगला
पान के रस में खरिल करि आंच देइ ३ फेरि बटसोर के रस में खरि
ल करै आंच देइ ७ फेरि मिर्च २५ पीसि जल में खरस कै खरिल
करि आंच देइ १ यही बिधि बड़ी इलाइची तेजपात चीत की जड़
पाढी के रस सोंठ सहसुन जायफर जावित्री सबन के खरस में
खरिल कै कै एक एक आंच देइ फेरि गंधक आंवला सार ७ पारा
दूनो खरिल करै पहर १ फेरि लोहा मेरै के खरिल करै पहर ४ फेरि
परई में धरि दूसरी परई से ॥ बन्द करि कपरौटी करै अति दृढ

सुखवै फिर आंच देइ पहर ४ फेरि सिंगरफ लेइ मिलैके खरिल करै पहर ४ फेरि देव १ पहर ४ फेरि घिउकुआरी के रस में खरिल करै पहर २ आंचदेइ पहर ४ येही विधि आंच १२ देइ तो लोहा सिद्ध होय वृका सिंगरफकें समसो अनोपान योगते सर्व रोग नाशै अमृततुल्य होय इति लोह विधि ॥ **अथ सिंगरफ बनाने की विधि** हिरमिजी ३ निशोदर ३- पारा आधी छटांक फेरि बहुत औ अलि सुरुख हिरमिजी जल में खरिल करि छानि लेइ सो कोरी हांडी में भरि चूल्हे पर धरि आंच दै औटै निशोदर तिजाय पारा डा रैजब गाढ़ होय तब उतारि लेइ हांडी ठंढी होय दिन १० तोई गुर होय **अथ तांबा हरताल की बिधि** हरताल तोला १ तांबा तोला ४ असगंध तोला ५ कोशा में तांबा हरताल मेथरै ऊपर असगं ध दै संपुटकै कपरौटी कै गजपुट आंचदेइ सिद्ध होय खाय चाउर भरि पान में बलपुष्ट भोग्य होय रोगसब नाशै इति तांबेश्वरः ॥ हरताल असगंध सोना यही बिधि मारै तो बसंतमालिनी रस होय **अन्य** हरताल असगंध चांदी यही तरह मारै तो रूपरस बनै **अथ गोदंती की बिधि** गोदंती हरताल तोला ५ अर्क दुग्ध में भिगोवै दिन २ संपुट कै फूंकै सिद्ध होय खाय चाउर भरि ॥ ॥ **अन्य** भांग और हरदी तर ऊपर धरि के फूंकै सिद्ध होय ॥ ॥ **अन्य** नरकछिकनी के रस में भिगोवै दिन १ बेरी की लुगदी में संपुट कै फूंकै तब सिद्ध होय इति गोदंती बिधिः ॥ **अथ अबरक की बिधि** अबरक ३। शोधि। तर ऊपर शोरा धरि के गाढ़ में लपेट के फूंकै सिद्ध होय ॥ सर्वरोगे पुटा तव्याः स्तदुला ईप्रमाणतः। रोगान श्यंतिसकला वलीभोगीगजेन्द्र वत् १ सहस्रपुट कै होय तो अमृततुल्य होय **अथ नाग के भस्म बिधि** सीसा तोला ५ भांग में धरि के पीपर की छाली में फूंकै सिद्ध होय **अथ बंगेश्वर बिधि** रांगा तोला ५ सै भांग स पुट में धरि बीच में रांगा धरि पीपर की सूखी छाल में गज पुट

आंचदेइ सिद्ध होय ॥ गंगापत्र के गोमूत्र में बुझावै ७ बेर फेर हरताल मदार के दुग्ध में पीसि पत्र में लेपै कोसा में संपुट के गजपुट आंचदेइ पहर २ फिर स्वांग शीतल निकारै सिद्ध होय ॥ इति नागकेशर बंगेश्वर बिधिः ॥ अथ अन्य बिधिः ॥ सिंधूत्थ विश्वा रुचिकाग्नि पथ्या हिंगूषणं टंकण गंधकंच तुल्यं समस्तं कुचिलाकुलकंच तुल्यं स्नेह्य दुग्धेन तन्निस्तुखं स्यात संसेव्यमानं गुटिका बिधेयं मुखप्रमाणं विनिहंति रोगान हृत्कुक्षि पार्श्वोदरनाभिशूलं मदाग्निनाशं ग्रहणी गदांश्च सिग्रं सेन गुटिका कार्य्या इति उदररोगप्रशमनी गुटिका ॥ सीसा पत्र के गोदुग्ध में बुझावै बार २ फेरि मैनसिल मदार के दुग्ध में पीसि पत्र में लेपै संपुट आंचदेइ पहर २ सिद्ध होय अथ रक्तपित्त औषधि सतावर गुर्च रूसा मुंडी वरियारी मूसली खैर अवरा बहेरा भारंगी पुहकर मूल ये सब दश दश पैसा भर लै चूर्ण कै पानी बारह सेर में औटै जब डेढ़ सेर बाकी रहै तब मिलै के छानि लेइ तेहि में मैनसिल के मारा सात डारै टंका १२ मिश्री टंका १५ फेरिणा की माफिक होय तो उतारि के घिउ मधु ८ बंसलोचन १ सिलाजीत शुद्ध १ तज १ काकरासिंगी १ पीपर १ वायभिरंग १ सोंठ १ जीरा १ हरै १ त्रिफला २५ धनिया २५ पत्रज २५ मिर्च २५ नागकेसर २५ सब चूर्ण कै डारै तो घृतपात्र में धरै सो खाय १२ तो रक्तपित्त कै खांसी छर्दि आटौ शूल पांडुरोग मूत्र कृच्छ बहुमूत्र आध्मान प्लीहा एते रोग जांय ध्रुव मिदम इति खंडखाद्या बले हो रक्तपित्तादौ अन्य रूसे का स्वरस १६ गोदुग्ध ६४ घी में पचावै चिरायता १२ कोरैया १२ मोथा १२ जेठी मधु १२ लोचनवाला १२ चंदन १२ इंद्रायनि १२ मौहा १२ तगर १२ सरिवन १२ खस १२ कमलगट्टा १२ चैमान १२ पद्माख १२ मनहरी १२ सब की पीठी कै पचावै सो घृत खाय २५ मिश्री मिलै के तो रक्त

पित्तनरहै अन्य सौंफ कीजीरा कीमैदा मिश्री मिलायखा-
य तो रक्तपित्त नरहै अथ नासारक्तस्रावे स्वेतदूबा अ-
नार की कली पीसि के नाश लेइ लोहू बन्द होय अन्य कुसुभ
हरा अनार कली पीसि नाश लेइ अन्य दारुहलदी का १२ कि-
समिस १२ मिले के खाय तो लोहू बन्द होय अथ खांसी
की दवा अफ़ीम की टिकरी १ कुचिला १ लौंग १ मिर्च १ जा
यफर धतूर के बीज १ सब खरिल करै गो घृत में पहर २ गो ली
बांधै चनासम सांझ का खाय १ तो कैसिउ खांसी होय नरहै सत्य
अथ स्वरभेद चिकित्सा गरम जल घिउ भात मिलेखाय
गुड़ मिलाय के इति वाते अथ जुलाब मिश्री नैन् खाय
२५ पथ्य दूध भात खाय इति वाते त्रिकुट का चूर्ण ६ मधु मिले
खाय इति कफे अन्य गजपिपरी पीपर पिपरामूर सोंठ स-
मलै चूर्ण के ६ गोमूत्र में पीवै दिन ७ अन्य त्रिफला त्रिकुट
चूर्ण के खावा करै अन्य अजमोदा हरदी चीतजवासा अ-
रा सम चूर्ण के घृत मधु में खाय ३६ अन्य हर्रा सोंठ पीपर स-
म चूर्ण के खाय ६ तो सुरभेद मिटै अन्य अगर देवदारु दारु ह-
रदी समलै काढ़ा के पीवे सुरभेद मिटै अन्य गोदुग्ध मिश्री १
पीवै सुरभेद मिटै अथ गोरक्षवटी स्वरभेदादौ पारा शुद्ध
१२ तांवा भस्म १२ लोहभस्म १२ भटकटैया के रस ते खरिल करै
बार ७ फेरि बड़ी बनावै मूंग प्रमाण सो खाय ओज १ तो स्वरभेद
मिटै इति अथ गोस्तनसीतला बिधिः गौ के स्तन में
एक तरह का छाला होता है वो ही छाले का पानी नश्तर की नो-
क पर धरके आदमी के वां ह पर चमड़े के भीतर पहुंचावे तो एक
फफोला दरि में पड़ना है दिन ३ के बाद सो नवें या दशवें दिन अ-
च्छा होता है फिर वा मनुष्य के कबहूं सीतला नाहीं निकरत है
उमिर भर निर्भय रहत है पुनर्विधि गोस्तन सीतला के छा
ला का एक नो की लेनश्तर से छाले के पानी निकालै सो पानी

आदमी के बांह पर सफाई से चमड़ा छील के उठावे जिहमा पानी निकरे तब चमड़ा के भीतर गोस्तन सीतला का पानी नस्तर के नोक से लगावे फेरि पटी औषधि वा परहेज का कामन हीं है औरटी का देने के बाद दिन ३ के एक छोटी फुनसी उठती है छठवें सातवें छाला हो ताहै अठयें दिन तक बैठ के पूर होत है फेरि गिर्द लाली किंचित सूजन होत है फेरि वह छाले का पानी निर्मल होत है सोउ पानी टीका देवे योग्य है गोस्तन के माफिक और नवयें दसवें रोज तक काहू काहू के थोरी तप होत है छेरी नी कू होत है दर समेत चौदह ते बीस दिन में दाग निशानी रहत है औरटी का लन क समय जन्मतादिन १२ बाद जब चाहत तब लइ यह टीका ते सीतला नाहीं निकरत है ध्रुव मिति अथ अति प्रभूत रस: पारा तोला १ बिष १ हरताल १ आंवला सार गंधक १ त्रिकटु ३ त्रिफला ३ सोहागा १ जमाल गोटा गोदुग्ध में मेंचुरे के १ लौंग १ मधु १ जवाखार १ ॥ बिधि ॥ पहिले पारा हरताल खरिल करे दूजे गंधक बिष मिलाना तीजे सोहागा मधु मिलावे चौथे त्रिकुटु मिलावे फेरि सबौषधि मिलाय भंगरा के रस ते खरिल करे पहर ६ तब सिद्ध होय गोली करे रत्ती प्रमाण की पान संग गोली खाय १ तो पुष्ट होय २ अदरक सों धातु थंभे २ छाछी सों हडरवा लु मिटै ३ गोघृत सों ज्वर मिटै ४ छेरी के दुग्ध सों निनाव मिटै ५ जवाइन सों पथरी जाय ६ बबुर के फल सों फिरंग बाद मिटै ७ नींबी के रस सों सुखकार होय मस ज्वर जाय ८ गूमा के रस सों बिषम ज्वर मिटै ९ नीवी के रस सों अठारह कुष्ट जाय १० पथ्य चना की रोटी अलोनी दिन २१ अवरा खांड सों धातु स्थंभन हो २१ रेंडासु पानी सों दीजे चिकनी पर मेह मिटै १२ अरसी तेल में मिलै गरम करि मर्दन करै सर्व शूल मिटै १३ धतूरे के रस से मरदन करै कमर पीर जाय १४ और पसुरिया बाई जाय १५ और अर्द्धंग बाई जाय १६

श्रौरगम्यिाबाईजाय २७ श्रौरसर्बबाईजाय २८ कटहरीके
रससोंखाय तोदमाजाय २९ रामचकरीयाकीबुकरी २५सों
दीजे तोसर्ब बाईजाय २० गोमूत्र २५ सों छईजाय २१ श्रौक
ठोदरमिटै २२ निम्बूकेरससोंभूखबढ़ै २३ श्रौरपित्तनाय २४
नेत्रांजनकरै तोजलभला होय २५ श्ररनीकेपत्रकेरससोंस
न्निपातजाय २६ श्रौरसितगजाय २७ श्रौरसुक्कबहिरीजा
य २८ श्रौरश्रंतरजरीजाय २९ श्रौरसरदीगरमीजाय ३०
छेरीकेमूत्र सों तापतिल्लीजाय ३१ श्रौरगलेकाफीहाजा-
य ३२ श्रौरउदरकोबातकृमजाय ३३ श्रौरउदरकीसर्वव्या
धिजाय ३४ छोटीइलाइची चीनिश्राकपूरसों दीजे तो मुख
कीदुर्गंधमिटै ३५ लौंगसों श्रजीर्ण मिटै ३६ ॥ इतिश्रग्नि
प्रभूतरसः॥ गोक्षुरकःक्षुरकः सतमूलीबानरिवीजबलाति
बलानांचूर्णमिदंपयसानिश्रिपीतंयस्यगृहेप्रमदाश्रातम
स्ति **श्रथकुष्टादियामारोगेतैलम्** कनकभुजगव
लीमालतीपत्रदूर्वामनसिलरसगंधंभर्दयेत्तैलमेतत् हर
तिसकलकुष्टंदुष्टपामाविर्चचीहरतिचर्मरंध्रंस्यामलंत्व
त्वचायाः श्रग्रहिण्यां श्रफीम १२ कत्थापापरी २५ गुड १
बूटीबनासुमखाय १ बंदहोयकैहोयतब श्रन्य जंगीहड़ १२
सोंठ १२ सौंफ १२१ श्रामकी कुशली १२ सबकी समचिरीखा
य १२ बन्दहोय सत्य ॥ जगज्जगन्यंघ्रियुगंहृदिस्मरन्नरसांक
नागेन्दुसितानवजे सराधयाकृष्णदृतीहमासितंसुबोध
नायात्रचकारसंग्रहम १मुनीश्वरैश्वार्कपुरस्सरैरुताटनेक
शास्त्राद्दहुसुज्ञसम्मतात् महौषधीनांहिमरांसमुहृतात्
राजत संग्रह कल्पबल्ली २

**इतिश्रीमद्विदिबंशाङ्गवराधेकृष्णपंडितविरचिता
श्रौषधिसंग्रहकल्पबल्ली समाप्ता संवत् १९३२ ॥**



